Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24 website- www.dvpnews.in रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 168 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, सोमवार 23 दिसम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अच्छे लोग दूसरों के लिए जीते हैं, जबकि दुष्ट लोग दूसरों पर जीते हैं।
Good People live for others while the bad people live on others.
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

मुख्यमंत्री साय ने नवागढ़ में 209 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का किया भूमिपूजन एवं लोकार्पण

मुख्यमंत्री साय नवागढ़ में आयोजित राज्य स्तरीय पंथी नृत्य एवं गुरू घासीदास लोककला महोत्सव के समापन समारोह में हुए शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय बेमेतरा जिले के विकासखंड मुख्यालय नवागढ़ में आयोजित तीन दिवसीय राज्य स्तरीय ओपन पंथी नृत्य प्रतियोगिता एवं गुरु घासीदास लोक कला महोत्सव 2024 के समापन समारोह में शामिल हुए। उन्होंने नवागढ़ में बाबा गुरु घासीदास जैतखम में पूजा-अर्चना कर राज्य की खुशहाली एवं समृद्धि की कामना की। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर 209 करोड़ 12 लाख 57 हजार रूपये के 74 विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण किया। उन्होंने नवागढ़ के कोदूराम दलित महाविद्यालय में एमकाम और साइंस विषय की 40-40 सीट और अनुसूचित जाति बाहुल्य 10 ग्रामों में 10-10 लाख रूपये की सीसी रोड का निर्माण कराए जाने की घोषणा की। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री श्री तोखन साहू, खाद्य मंत्री श्री दयाल दास बघेल और राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ का समाज एक समतामूलक समाज है। इस समाज के निर्माण में बाबा गुरु घासीदास जी के विचारों की छाया स्पष्ट नजर आती है। मनखे-मनखे एक समान के अपने संदेश से यही बात उन्होंने कह दी। जब एक दूसरे को समानता के दृष्टिकोण से देखना शुरू कर देंगे तो बैरभाव स्वत: ही समाप्त हो जाएगा। उनका यह संदेश केवल समाज ही नहीं अपितु देश-दुनिया को एकजुटता के सूत्र में बांधता है। ऐसे समय में जब विघटनकारी तत्व देश की एकता को तोड़ने की साजिश में लगे हैं, बाबा गुरु घासीदास जी के संदेश प्रकाश स्तंभ की तरह हमें रास्ता दिखा रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारा छत्तीसगढ़ धान का कटोरा है। धान के कटोरे की पहचान जिन किसान भाइयों से है, वे सुखी समृद्ध रहें इसके लिए हम किसान भाइयों से 3100 रुपए प्रति क्विंटल तथा 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान खरीद रहे हैं। पिछली बार हमने 145 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा, इस बार उम्मीद है कि धान खरीदी का यह आंकड़ा 160 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच जाएगा। बाबा जी ने महिला और पुरुषों के बीच समानता का संदेश भी दिया है। यह समानता तब आयेगी जब आर्थिक रूप से भी हमारी माताएं-बहनें पूरी तरह से सशक्त हों, इसके लिए ही मोदी जी ने हमारी माताओं-बहनों को महतारी वंदन योजना के रूप में हर महीने एक हजार रुपए की गारंटी दी। शपथ ग्रहण के पहले दिन से ही हमने महतारी वंदन योजना के क्रियान्वयन के लिए काम करना आरंभ कर दिया था। तीन महीने के भीतर ही हमने 70 लाख माताओं-बहनों के खाते में हर महीने एक हजार रुपए की राशि देनी आरंभ कर दी। अब तक हम योजना की दस किश्त दे चुके हैं। उन्होंने कहा कि हमारे युवाओं को रोजगार के उचित अवसर मिल सकें, परीक्षाओं में पूरी तरह पारदर्शिता हो, इसके लिए भी हमने कार्य किया। पीएससी परीक्षा की जांच सीबीआई को सौंपी गई। इस साल पीएससी की परीक्षा पूरी पारदर्शिता के साथ आयोजित हुई। मैं पीएससी के टापर्स से मिला, उन्होंने मुझे बताया कि पिछली सरकार में जमकर हुए भ्रष्टाचार के चलते बहुत से युवाओं का पीएससी से भरोसा उठ गया था, इस बार साफ्सुथरी परीक्षा हुई तो भरोसा फिर से कायम हुआ। अनुसूचित जाति, जनजाति के युवा कलेक्टर, एसपी बन सकें, इसके लिए हमने दिल्ली में ट्राइबल यूथ हास्टल में युवाओं के लिए 135 सीटें बढ़ाई हैं। हम लोग युवाओं के लिए नालंदा की तर्ज पर 13 लाइब्रेरी भी नगरीय निकायों में आरंभ करने जा रहे हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारी सरकार का पूरा फोकस अनुसूचित जाति-जनजाति के विकास पर है। इसके लिए हमने बजट प्रावधान में भी उल्लेखनीय वृद्धि की है।

पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर लाभांडी में 30 लाख की चोरी

सोने-चांदी के पूजन उपकरण, भगवान का छत्र आदि चुरा ले गए चोर

भगवान का छत्र चोरी

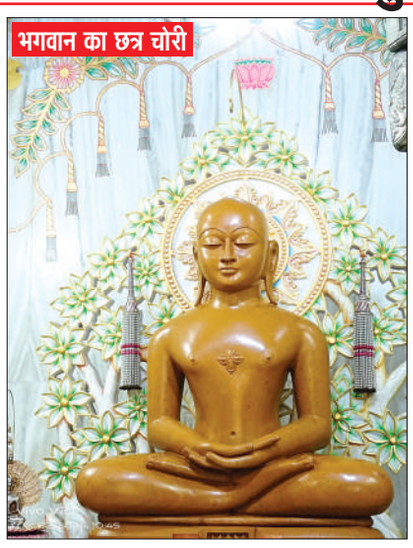

मंदिर जी से चोरी हुए सामान की सूची इस प्रकार है

- चांदी का छत्र बड़ा- 1
- चांदी की थाली 2 बड़ी
- अभिषेक कलश 9
- शांती धारा कलश 6
- स्वर्ण कलश 1
- छोटे छत्र 4
- चांदी थाली 2 छोटी
- चांदी प्लेट 5
- चांदी गुंडी 1 बड़ी
- चांदी कटोरा बड़ा 1
- पंच मेरू, अष्ट प्रतिहारी, चांदी चम्मच एवं पूजा के छोटे सामान शामिल है।

जैन समाज में रोष : चोरों को पकड़ने में सक्रिय है पुलिस

गर्भगृह की खूंटी तोड़ी

सीसीटीवी के वायर काटे

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री पद्म प्रभु दिगंबर जैन मंदिर लाभांडी, रायपुर मे अज्ञात चोरों ने संपूर्ण जैन समाज के लिए हृदय ? विदारक घटना को अंजाम दिया, अज्ञात चोरों ने दिनांक 21 दिसंबर की अर्ध रात्रि लगभग 1:30 बजे मंदिर के बाईं ओर के दरवाजे के ताले काटकर भगवान के चांदी के छत्र एवं अन्य चांदी की पूजन सामग्री जिसकी कीमत लगभग 30 लाख रुपए से अधिक बताई जा रही है की चोरी को अंजाम दिया। देश के समूचे जैन समाज को इस घटना ने झकझोर दिया है।

आज सुबह जब लाभांडी मंदिर में प्रात: 5:30 बजे मंदिर के सेवक पुजारीगण मंदिर पहुंचे तो देखा कि मंदिर का बाईं तरफ का द्वार खुला हुआ है एवं भगवान पर लगा हुआ चांदी का छत्र एवं अलमारी में रखे हुए चांदी की आदि महत्वपूर्ण सामग्री गायब हैं।

सीसीटीवी फुटेज में देखने पर मालूम हुआ कि दो अज्ञात चोर इस मंदिर के ताले तोड़कर मंदिर में प्रवेश करते हुए नजर आए और उन्होंने सीसीटीवी कैमरे के वायर काटकर इस घटना को अंजाम दिया।

सूचना तत्काल पुलिस को दी गई पुलिस ने कार्रवाई करते हुए उच्च अधिकारियों ने पहुंचकर मौके पर फिंगरप्रिंट फॉरेंसिक डॉग स्कायड आदि द्वारा जांच प्रारंभ की।

जैन समाज में चोरी खबर फैलते ही नगर के विभिन्न अंचलों से समाज के लोग वहां भारी संख्या में एकत्रित हो गए सभी ने इस चोरी पर गहरा दुख एवं रोष प्रकट किया। पुलिस अधिकारियों द्वारा यह आश्वासन दिया गया है कि वह कार्यवाही कर चोरी का खुलासा करने हेतु प्रयासरत है।

मंदिर समिति के प्रमुख श्री विनोद जैन बडजात्या ने कहा कि यह संतोष की बात है कि भगवान जी की प्रतिमाओं की चोरी नहीं हुई व सभी भगवान सुरक्षित हैं, बाकी उन्होंने भी विश्वास जताया कि पुलिस की सक्रियता से चोरी का शीघ्र खुलासा होगा साथी ही अपराध करने वाले अपराधियों के खिलाफ भी कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने की उन्होंने प्रशासन से मांग की।

मंदिर समिति ने किया अनुरोध

मंदिर समिति ने अनुरोध किया है कि उपरोक्त सामान कोई भी व्यक्ति बेचने या गलाने आए तो कृपया पुलिस को या निम्न नंबर पर सूचित करे। 9425214049, 998192425, 9009878787। बताने वाले का नाम गुप्त रखा जायेगा।

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय दिल्ली रवाना हुए

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय दिल्ली रवाना हुए। माना एयरपोर्ट में दौरे की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि कल दिल्ली में इन्वेस्टर कनेक्ट कार्यक्रम में उद्योगपतियों से मुलाकात कर नई औद्योगिक नीति पर चर्चा और प्रदेश में निवेश हेतु आमंत्रित करेंगे। आगे उन्होंने कहा, बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी का सम्मान जीतना भारतीय जनता पार्टी ने किया है उसे दुनिया जानती है।

सीएम सचिवालय में अब चार सचिव, अमित कटारिया को स्वास्थ्य विभाग की जिम्मेदारी

रायपुर (विसं)। राज्य सरकार ने 2005 बैच के आईएएस मुकेश बंसल को सीएम सचिवालय में सचिव नियुक्त किया है। मुकेश बंसल वित्त सचिव और जीएडी सचिव हैं। सीएम सचिव के रुप में उन्हें अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। मुकेश बंसल की नियुक्ति के साथ ही अब सीएम सचिवालय में चार सचिव हो गए हैं। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से लौटने के बाद लंबे अरसे से प्रभार का इंतज़ार कर रहे 2004 बैच के आईएएस अमित कटारिया को स्वास्थ्य और स्वास्थ्य शिक्षा विभाग का सचिव बनाया गया है। यह विभाग प्रभार पहले गृह सचिव मनोज पिंगुआ के पास था।

रोजगार मेले में प्रधानमंत्री मोदी 71,000 युवाओं को सौंपेंगे नियुक्ति पत्र

नई दिल्ली (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को भर्ती अभियान 'रोजगार मेला में 71,000 से ज्यादा युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपेंगे। इस अवसर पर पीएम मोदी युवाओं को वीडियो कांफ्रेंस के जरिए संबोधित भी करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय ने रविवार को एक बयान जारी कर यह जानकारी दी। प्रधानमंत्री मोदी देश भर में एक साथ 45 जगहों पर आयोजित कार्यक्रमों में वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए सुबह 10:30 बजे कार्यक्रम से जुड़ेंगे।

कुवैत ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को दिया अपना सर्वोच्च सम्मान द ऑर्डर ऑफ मुबारक अल कबीर

यह प्रधानमंत्री मोदी को किसी देश द्वारा दिया गया 20वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मान है

नई दिल्ली (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कुवैत का सबसे बड़ा सम्मान द ऑर्डर ऑफ मुबारक अल कबीर दिया गया है। यह पीएम मोदी को किसी देश द्वारा दिया गया 20वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मान है।

मुबारक अल कबीर ऑर्डर कुवैत का एक विशेष नाइटहुड सम्मान है। यह सम्मान आमतौर पर किसी देश के प्रमुख, विदेशी शासकों और राजपरिवार के सदस्यों को दोस्ती के प्रतीक के रूप में दिया जाता है।

इससे पहले यह सम्मान बिल क्लिंटन, प्रिंस चार्ल्स और जॉर्ज बुश जैसे अंतरराष्ट्रीय नेताओं को दिया जा चुका है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कुवैत में एक श्रमिक शिविर का दौरा किया। पीएम मोदी ने कुवैत के मीना अब्दुल्ला क्षेत्र में गल्फ स्पिक लेबर कैंप का दौरा किया, जिसमें लगभग 1,500 भारतीय नागरिक कार्यरत हैं। इस दौरान पीएम मोदी ने श्रमिकों से बात की।

विदेश मंत्रालय के अनुसार, प्रधानमंत्री का दिन का पहला कार्यक्रम यह दर्शाता है कि भारत विदेशों में भारतीय कामगारों के कल्याण को कितना महत्व देता है। उल्लेखनीय है कि कुवैत में भारतीय समुदाय सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। कुवैत की कुल आबादी में भारतीय 21 प्रतिशत (1 मिलियन) हैं और इसके कार्यबल (लगभग 9 लाख) में 30 प्रतिशत हैं। इससे पहले 21 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का शनिवार दोपहर कुवैत सिटी स्थित होटल में पहुंचने पर भारतीय समुदाय ने भव्य स्वागत किया। पीएम मोदी कुवैत राज्य के अमीर शेख मेशल अल-अहमद अल-जबर अल-सबाह के निमंत्रण पर अपनी ऐतिहासिक दो दिवसीय यात्रा पर यहां पहुंचे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार दोपहर को कुवैत पहुंचे थे। वह 43 साल में इस खाड़ी देश की यात्रा करने वाले पहले भारतीय पीएम बन गए। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि उनकी यात्रा भारत और कुवैत के लोगों के बीच विशेष संबंधों और मैत्री के बंधन को और मजबूत करेगी।

रूस के तातारस्तान में यूक्रेनी ड्रोन हमलों ने मचाई तबाही, आपातकाल का ऐलान

मॉस्को (एजेंसी)। रूस के तातारस्तान गणराज्य ने यूक्रेनी ड्रोन हमलों के बाद आपातकाल लगा दिया है। आपात स्थिति से निपटने के लिए सरकारी निकायों और इमरजेंसी रिस्पॉन्स यूनिट्स को अलर्ट कर दिया गया है।

प्रेस सर्विस ऑफ तातारस्तान से राष्ट्रपति रुस्तम मिन्निखानोव ने कहा कि तातारस्तान के प्रमुख ने सरकारी एजेंसियों और आपातकालीन स्थितियों के मंत्रालय के लिए एक विशेष आपातकालीन मोड लागू करने के आदेश पर हस्ताक्षर किए हैं। कानून के अनुसार हमलों के परिणामों को तेजी से संभालने के लिए यह स्थिति आवश्यक है। यह आदेश विशेष रूप से प्रतिक्रिया प्रयासों में शामिल लोगों पर लागू होता है और आम आबादी को प्रभावित नहीं करता है।

शनिवार को तातारस्तान की राजधानी कजान में आठ ड्रोन हमलों की सूचना मिली, जिनमें से छह ने आवासीय भवनों को निशाना बनाया। शिन्हुआ समाचार एजेंसी ने बताया कि प्रारंभिक रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि कोई हताहत नहीं हुआ।

तातारस्तान के गवर्नर, राष्ट्रपति रुस्तम मिन्निखानोव ने पुष्टि की कि छह ड्रोन ने आवासीय भवनों पर हमला किया, एक ने औद्योगिक स्थल पर हमला किया और एक अन्य को नदी के ऊपर मार गिराया गया। यूक्रेन ने अपनी सुरक्षा नीति के अनुसार इन हमलों को स्वीकार नहीं किया है। शुक्रवार को रूस के कुर्स्क सीमा क्षेत्र के एक कस्बे पर अमेरिका द्वारा आपूर्ति की गई मिसाइलों से किए गए हमले में एक बच्चे सहित छह लोगों की मौत हो गई थी।

छत्तीसगढ़ में तेजी से हो रहा है स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार : विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री साय ने कायाकल्प राज्य स्तरीय पुरस्कारों का किया वितरण

रायपुर (आरएनएस)। प्रदेश में तेजी से स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार हो रहा है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने मेडिकल कॉलेज रायपुर में आज कायाकल्प राज्य स्तरीय पुरस्कार समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही। जशपुर जिले से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दुलदुला को मिला। मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जात्रा को प्रशस्ति पत्र और 15 लाख का चेक प्रदान किया गया। इसी प्रकार मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य में अच्छे कार्य के लिए पत्थलगांव विकास के आयुष्मान आरोग्य मंदिर पाकरगांव की सी एच वो संदीपा सिंगार को संस्था गत प्रसव कार्य में बेहतर कार्य के लिए सम्मानित किया। कलेक्टर रोहित व्यास ने स्वास्थ्य विभाग के टीम को अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कार्यक्रम में स्वास्थ्य योद्धाओं, टीबी मुक्त ग्राम पंचायतों को सम्मानित किया और चिकित्सकीय संवर्ग के नवनियुक्त स्वास्थ्य कर्मियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि जब प्रदेश का प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ होगा तभी हम विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण का लक्ष्य प्राप्त कर पाएंगे। डबल इंजन की सरकार में स्वास्थ्य सुविधाएं सुदृढ़ हो रही हैं। उन्होंने प्रदेश में टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत अब तक 11 लाख से अधिक लोगों के स्क्रीनिंग के लिए स्वास्थ्य अमले को बधाई दी। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि परिवेश की स्वच्छता के साथ ही अस्पताल की स्वच्छता भी बहुत महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब स्वच्छ भारत का संकल्प लिया था, उसमें अस्पताल की स्वच्छता को भी प्राथमिकता दी गई।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि सांसद रहने के रहने के दौरान मेरे दिल्ली स्थित निवास में इलाज के लिए लोगों का आना-जाना लगा रहता था। एम्स में इलाज के लिए आने वाले मरीज और उनके परिजन मेरे आवास में ही रुकते थे। तब मेरे घर की व्यवस्था देख श्रद्धेय स्वर्गीय दिलीप सिंह जूदेव ने कहा था कि तुमने तो अपने घर को मिनी एम्स बना रखा है। श्रद्धेय अटल जी के कार्यकाल के दौरान रायपुर एम्स की जब स्वीकृति मिली तो वास्तव में छत्तीसगढ़ और आसपास के इलाकों के लाखों लोगों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का रास्ता खुल गया। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संवेदनशील नेतृत्व ने आम जनता के कारगर इलाज के लिए आयुष्मान भारत योजना तैयार की।

अश्विनी वैष्णव ने 101 रेलवे अधिकारियों को 69वां अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार 2024 और विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने जोनों को 22 शील्ड प्रदान की

रेल मंत्री ने भारत में रेल यात्रियों को विश्वस्तरीय अनुभव प्रदान करने सुरक्षा, रखरखाव, गुणवत्ता और प्रशिक्षण में तीन गुना अधिक ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया

रेल मंत्री श्री वैष्णव ने घोषणा की कि अगले वर्ष से उत्कृष्ट स्स्त्क्ष (सुरक्षा, रखरखाव, गुणवत्ता और प्रशिक्षण) प्रथाओं के माध्यम से रेलवे के कार्य संस्कृति में उत्कृष्टता लाने के लिए शील्ड के साथ वित्तीय पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। रेल, सूचना और प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने आज भारत मंडपम, नई दिल्ली में 101 रेलवे अधिकारियों को 69वां अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार और विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले ज़ोनों को 22 शील्ड प्रदान की। इस समारोह में रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं सीईओ श्री सतीश कुमार, रेलवे बोर्ड के सदस्य और विभिन्न रेलवे ज़ोनों व उत्पादन इकाइयों के महाप्रबंधकों की उपस्थिति रही।

पुरस्कार और शील्ड प्रदान करने के बाद सभा को संबोधित करते हुए, श्री वैष्णव ने सभी पुरस्कार विजेताओं को उनके असाधारण कार्य और प्रयासों के लिए बधाई दी। उन्होंने भारतीय रेलवे द्वारा पिछले एक दशक में प्राप्त परिवर्तनकारी प्रगति को रेखांकित किया। उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी रेल लिंक और उत्तर-पूर्व संपर्क परियोजनाओं की तीव्र प्रगति का उल्लेख किया। 2025 तक 100 प्रतिशत विद्युतीकरण का लक्ष्य, वंदे भारत, नमो भारत और माल गलियारा जैसी परियोजनाओं की तीव्र प्रगति, और कवच सुरक्षा प्रणाली का बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

मंत्री ने स्टेशन पुनर्विकास, परिणामी दुर्घटनाओं में भारी कमी (345 से 90 तक), और 1.5 लाख पदों की शिकायत-मुक्त भर्ती प्रक्रिया की प्रशंसा की। उन्होंने स्वच्छता पहलों और एक नए सुपर ऐप की घोषणा की, जो यात्री अनुभव में क्रांति लाएगा।

उन्होंने बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण और यात्रियों को विश्वस्तरीय अनुभव प्रदान करने के लिए सुरक्षा, रखरखाव, गुणवत्ता और प्रशिक्षण पर तीन गुना प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने उद्योग सहयोग, उन्नत निरीक्षण प्रणाली, और जमीनी स्तर की प्रतिक्रिया के आधार पर अधिकारियों और तकनीशियनों के लिए बेहतर प्रशिक्षण का आश्वासन दिया।

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और सीईओ श्री सतीश कुमार ने अपने स्वागत भाषण में भारतीय रेलवे की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया कि वह गति, आराम और सुरक्षा के उच्चतम मानकों का पालन करते हुए विश्वस्तरीय यात्रा अनुभव प्रदान करेगा। उन्होंने अमृत भारत स्टेशन जैसी परियोजनाओं की सराहना की, जो स्टेशनों को लिफ्ट, एस्केलेटर, और दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाओं से सुसज्जित कर रहे हैं।

भारतीय रेलवे हर वर्ष अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार प्रदान करता है। ये पुरस्कार व्यक्तिगत और ज़ोनल प्रदर्शन के लिए दो श्रेणियों में दिए जाते हैं। व्यक्तिगत पुरस्कार रेलवे कर्मियों की मेहनत और असाधारण योगदान को मान्यता देते हैं, जबकि शील्ड सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन और रेलवे के समग्र प्रदर्शन में योगदान के लिए दी जाती हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, सोमवार 23 दिसम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय बलौदाबाजार में 'विश्व ध्यान दिवस' का हुआ आयोजन

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय, बलौदाबाजार में आज 21 दिसंबर को ''विश्व ध्यान दिवस'' का सफल आयोजन हुआ। आर्ट ऑफ लिविंग की डिस्ट्रिक्ट को-आर्डिनेटर श्रीमती किरण वर्मा के मार्गदर्शन एवं डॉ. केशरवानी के संयोजकत्व में छात्राओं में एकाग्रता, आत्मसंयम मानसिक दृढता जैसे आंतरिक गुणों को साथ साथ तनाव मुक्त जीवन जीने के प्रेरित किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. वासु वर्मा, डॉ. कल्पना उपाध्याय, डॉ. विद्या पांडे, श्री सूर्यकांत साहू, श्रीमती रोशनी, श्री संजय बघेल, डॉ. अर्पिता सोनी, डॉ. चित्ररेखा सिंगरौल, डॉ. जमीला, श्रीमती तनु जाल, श्री कुलदीप द्विवेदी, श्री राजाराम पटेल, सुश्री प्राची जयसवाल, डॉ. मंजू अग्रवाल तथा महाविद्यलयीन अधिकारी, कर्मचारी एवं लगभग 210 छात्राओं ने ध्यान योग का लाभ लिया।

सड़क हादसे में दो लोगों की मौत

बलौदाबाजार-रायपुर (आरएनएस)। थाना सिटी कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत ग्राम अमेरा डोटोपार बाईपास में ग्राम पनगांव के पास एक अज्ञात वाहन द्वारा एक्सीडेंट हुआ है जिसमें एक महिला एवं पुरुष की मृत्यु हो गई है। दुर्घटना के दौरान मोटरसाइकिल चालक एक पुरुष एवं एक महिला की मृत्यु हो गई। सूचना पर थाना सिटी कोतवाली का पुलिस बल तत्काल घटना स्थल पहुंचा एवं दोनों मृतकों के शव को पोस्टमार्टम हेतु जिला अस्पताल बलौदाबाजार लाया गया है। मृतकों के नाम- अशोक साहू पिता मुन्ना लाल साहू उम्र 35 साल सकिन सलखन थाना शिवरीनारायण जिला जांजगीर चांपा। पुष्पा देवी साहू पति दशरथ साहू उम्र 40 वर्ष साकिन सलखन थाना शिवरीनारायण जिला जांजगीर चांपा।

संत इग्नासियुस चर्च शांति भवन में क्रिसमस गैदरिंग की धूम, कैरोल गीतो पर डांस की प्रस्तुति

प्रभु येसु का जन्म मानव जाति के उद्धार के लिए हुआ : केरकेट्टा

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। जशपुर शहर के रायगढ़ रोड स्थित संत इग्नासियुस चर्च शांति भवन में काथलिक सभा के तत्वावधान में रविवार को क्रिसमस गैदरिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रेभ. फा. दिलीप किसपोट्टा घोलेंग डीनरी के डीन, फा. फुलजेन्स एक्का पल्ली पुरोहित संत इग्नासियुस चर्च शांति भवन, फा. अजय केरकेट्टा, फा. अलेक्स लकड़ा, फा. फुलजेन्स लकड़ा और सीनियर सिटिजन प्रतिनिधि ने दीप प्रज्वलित कर क्रिसमस गैदरिंग का शुभारंभ किया। इस अवसर पर रंगारंग क्रिसमस कैरोल के गीतो पर डांस प्रस्तुति कचहरी पारा, हाउसिंग बोर्ड कोलोनी, भागलपुर, रानी बगीचा, करबला रोड, मधुवन टोली, बरटोली, तेतर टोली, नवाटोली, चांपा टोली, बसंत बिहार, शांति नगर-लक्ष्मी नगर, बिजली टोली, डिपाटोली-सरना टोली, सारुडीह, गुटरी, कनमोरा आदि मोहल्लों से यंग और उभरते कलाकारों के द्वारा किया गया। मसीही गीतों और नृत्य ने उपस्थित लोंगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस शानदार किसमस गैदरिंग कार्यकम को साक्षी देने जैसे लोकधर्मियों का जनसैलाब ही उमड़ पड़ा।

क्रिसमस, उमंग उत्साह का पर्व : बतौर मुख्य अतिथि रेभ. विशप इमानुएल केरकेट्टा के सानिध्य मे कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अपने उदबोधन मे उन्होंने कहा कि प्रभु येसु का जन्म मानव जाति के कल्याण और और उद्धार के लिए हुआ है। प्रभु येसु हमे जीवन की विकट परिस्थितियों से उबरने और बेहतर काथलिक परिवार बनने के लिय आशिर्वाद प्रदान करेंगे। सचमुच मे बालक येसु का जन्म आनंद से भर देता है। क्रिसमस खुशियों का, उमंग, उल्लास और उत्साह का पर्व है। प्रभु येसु के जन्मोत्सव को सभी लोग मिल जुल कर मनाते हैं। आगे उन्होंने कहा कि माताएँ, बहनें भी माँ मरियम की तरह पवित्र, निष्कलंक और ईश्वर के बताए मार्ग पर चलें साथ ही पिता और भाईगण संत जोसेफ के समान धर्मपरायण, कर्तव्यनिष्ट, ईमानदार और परिवार की जिम्मेदारियों को निर्वाहण करने की सच्ची निष्ठा पर चलें।

यह रहें शामिल

रेभ. विशप इमानुएल केरकेट्टा ने सभी लोगों को क्रिसमस की बधाई दी। कार्यकम के अंतिम चरण में भीमसुमन म्युजिकल ग्रुप जशपुर ने किसमस गैदरिंग में चार चांद लगा दिया। कार्यक्रम के मौके पर पारिश के पुरोहित, धर्म बहनें, काथलिक सभा के सभापति मनोज तिर्की, सुभाष टोप्पो, पुरुषोतम बघेल, विनय तिर्की, संजय बरवा, सतीस बड़ा, और महिला संग की अध्यक्षा सलोमी के साथ बड़ी संख्या मे माताएँ एवं युवा साथी और विश्वासी गांव और शहर से उपस्थित थे।

शासकीय योजनाओं को रैली के माध्यम से दे रहे जानकारी, सामाजिक दायित्वबोध निभा रहे बरगांव के छात्र

जशपुर (विश्व परिवार)। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बरगांव में शासन की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की दी गई जानकारी छत्तीसगढ़ शासन की सफलतापूर्वक 1 वर्ष पूरे होने पर शासन के विभिन्न योजनाओं जिसमें महतारी बंधन योजना, कृषक उन्नति योजना, आयुष्मान कार्ड योजना, के तहत गंभीर बीमारी से युक्त परिवार को 5 लाख तक की इलाज़ की सुरक्षा, आवासहीन परिवारों के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना प्रदान किए जाने संबंधी जानकारी प्रदान किए गए। साथ ही नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से सरकार के विभिन्न योजनाओं का बेहतर प्रदर्शन कराया गया। विद्यालय की प्राचार्य ज्योति तिर्की ने कहा कि शासन की कल्याणकारी योजनाओं को छात्रों के माध्यम से गांव-गांव तक उनके गार्जियन और गांव के बुजुर्गों को जानकारी प्रदान करना छात्रों का नैतिक और बच्चों का सामाजिक दायित्व भी है कि वह इन योजनाओं को बारे में बता सकते हैं। साथ ही विद्यालय में रंगोली व अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अभी भी समज में जानकारी के अभाव में वंचितों को सुविधा नही मिल पाती है। विद्यालय में कार्यक्रम के सम्पादन में सचिन्तानन्द यादव, व्याख्याता मिथलेश पाठक, प्रीति लकड़ा, एस एन केरकेटा, जयासिंह सहित सभी कर्मचारियों का सराहनीय योगदान रहा।

डी.के. महाविद्यालय में गणित दिवस का आयोजन

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। 22 दिसंबर 2024 को शासकीय दाऊ कल्याण महाविद्यालय बलौदा बाजार में गणित दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें निबंध प्रतियोगिता, क्विज कंपटीशन, ऑनलाइन क्विज, मैथ्स रेस और रंगोली प्रतियोगिता, पीपीटी प्रेजेंटेशन प्रमुख थे। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए.आर.सी. जेम्स की अध्यक्षता कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती वंदना सूद थीं। उनके साथ डॉ. पी. झा, डॉ. यू.के. मिश्र, और डॉ. राजेंद्र मिश्रा, श्रीमती नीरजा, नामदेव, श्रीमती स्निग्धा नामदेव, श्रीमती लकेश्वरी साहू, श्रीमती कंचन कश्यप, श्री प्रियांशु शर्मा, श्री जयशंकर साहू जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व उपस्थित रहे।श्रीमती वंदना सूद ने गणित के रोचक ट्रिक्स और नए-नए तरीकों पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को प्रेरित किया। प्राचार्य डॉ. ए.आर .सी.जेम्स ने गणित के महत्त्व और इसके जीवन में उपयोग पर प्रकाश डाला। साथ ही, डॉ. पी. झा ने गणित के नए आयामों और शोध की संभावनाओं के बारे में जानकारी साझा की, जो छात्रों के लिए बेहद ज्ञानवर्धक रही। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के उत्साह और उनके सक्रिय भागीदारी से सफल रहा। महाविद्यालय परिवार की ओर से इस आयोजन में योगदान देने वाले सभी छात्रों, शिक्षकों और अतिथियों का शुभकामनाएं दिया गया।

मरार समाज की बैठक में हुआ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा

आरंग (विश्व परिवार)। रविवार को कोसरिया मरार पटेल समाज नांदगांवराज का बैठक अकोली रोड स्थित पटेल धर्मशाला आरंग में आहुत किया गया। जिसमें समाज विकास संबंधी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा परिचर्चा किया गया।इस अवसर पर ग्राम नांदगांव के पप्पू पटेल को बेलसोंडा सहकारी समिति के अध्यक्ष बनाए जाने पर हर्ष व्यक्त करते हुए उपस्थित सभी पदाधिकारियों व सामाजिक जनों ने गुलदस्ता भेंटकर बधाई दिये।साथ ही सामाजिक विकास संबंधी विषयों पर विचार व्यक्त करते हुए आगामी कार्यकारिणी बैठक ग्राम लाफिन कला में रखने का निर्णय लिया गया।इस अवसर पर नांदगांव राज के संयोजक गोविन्द पटेल, अध्यक्ष तुकाराम पटेल, उपाध्यक्ष रामसुमन पटेल, सचिव सुंदर पटेल, कोषाध्यक्ष वेदप्रकाश पटेल, पंजीयन सचिव, तामेश्वर पटेल, अंकेक्षक रामायण पटेल, अन्य पदाधिकारियों में मंगल पटेल, दिलीप पटेल, दीनबंधु पटेल, गुलाब पटेल प्रहलाद पटेल, कुमार पटेल, नरेश पटेल, मीडिया प्रभारी महेन्द्र पटेल सहित बड़ी संख्या में समाज के लोगों की उपस्थिति रही।

कलेक्टर ने ग्राम तालुर में महतारी वंदन योजना में अनियमितता की जांच करने के दिए निर्देश

जगदलपुर (विसं)। कलेक्टर श्री हरिस एस ने महतारी वंदन योजना के ग्राम तालुर से संबंधित अनियमितता की जांच महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला अधिकारियों को करने के निर्देश दिए। साथ ही संबंधित के बैंक खाते को सीजकर वसूली की कार्यवाही करने तथा इस कार्य में संलग्न कार्यकर्ता और व्यक्ति के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराने के निर्देश दिए। महिला एवं बाल विकास विभाग ने रविवार को संबंधितों पर आवश्यक कार्यवाही भी किए। जिला कार्यक्रम अधिकारी ने बताया कि मीडिया में दिखाई जा रहे हैं समाचार महतारी वंदन योजना में सनी लियोन को मिल रहे हजार रुपए के समाचार के शिकायत प्राप्त हुई, जिसकी प्रारंभिक जांच से पता चला की उक्त आवेदन ग्राम तालूर की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती वेदमाती जोशी के आईडी से रजिस्टर्ड हुआ है गहराई से जांच किए जाने पर पता चला की वीरेंद्र जोशी नामक व्यक्ति द्वारा इस संबंध में जो जालसाजी कर अवैधानिक तरीके से राशि का आहरण अपने खाते में किया जा रहा है संबंधित के विरुद्ध शासन के साथ धोखाधड़ी करने के अपराध में प्राथमिक की दर्ज कराई जा रही है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16208/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16208
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 54 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR652N0622A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **1. PRADEEP PRITHWANI , 2. VIJAY RAJANI , 3. RAKESH AMRANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JOTUMAL PRITHWANI , LATE. D.M. RAJANI , SEVAK RAM AMRANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. ROSHAN LAL OCHWANI 2. VIKAS OCHWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ARJUNDAS OCHWANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16176/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16176
वार्ड का नाम- 49 - गुरू घासीदास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 49 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR344C00355** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RASHMEET SINGH KHURANA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. SURJEET SINGH KHURANA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **HARJEET SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JAGROOP SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16138/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 21-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16138
वार्ड का नाम- 53 - बाबू जगजीवनराम वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 53 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446S00336** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAHUL WADHAN DAS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **WADHAN DAS TALREJA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VINAY BABLANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DHANRAJ BABLANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16114 / न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 21-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16114
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445C0284A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **S.N.J ASHISH KUMAR BOHRE, SATISH KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PREMLAL BOHRE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. SATISH KUMAR BOHARE 2. RATNA KALA BOHARE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1. PREMLAL BOHRE 2. ASHISH KUMAR BOHRE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **मृत्य प्रमाण पत्र के आधार पर** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16084 / न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16084
वार्ड का नाम- 55 - रविन्द्रनाथ टैगोर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 55 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR651H00468** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **CHANDRAKANT** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LAKHAN LAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **YOGESH KUMAR SONI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **TULARAM SONI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **मलमा बिक्रीनामा एवं शपथ पत्र**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16576/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 19-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16576
वार्ड का नाम- 15 - ने. कन्हैया लाल बाजारी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 15 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108B00222** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **GEETA BEN KHANT** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VIJAY BHAI KHANT** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. DIMPLE SHAH, JAYESH KUMAR SHAH** पिता/पति, श्री/ श्रीमती **W/O 1. JAYESH KUMAR SHAH, S/O 2. LATE KALYAN JI SHIVJI SHAH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16683/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16683
वार्ड का नाम- 03 - संत कबीर दास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 03 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802M00040** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MOHAN LAL SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DHELURAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. DULARA BAI SAHU, 2. KHEMRAJ SAHU, 2. JIVANLAL SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O 1. LATE MOHAN LAL SAHU, S/O 2&3. LATE MOHAN LAL SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **MRITYU PRAMAN PATRA, SAPATH PATRA AND B1** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16458 / न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16458
वार्ड का नाम- 04 - यतियतन लाल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 04 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR104B0390A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAMESH KUMAR SURESH KUMAR GOVIND**पिता/पति, श्री/श्रीमती **MUNNA SWAMI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GOVIND SWAMI NAIDU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. MUNNA SWAMI NAIDU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16685 / न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16685
वार्ड का नाम- 03 - संत कबीर दास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 03 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR803G00160** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **TEJURAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MAHAGUJI BAID** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **RAJKUMARI SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O RAMESH SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./15972/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15972
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445F00098** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHYAM KUMAR BHATIA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ISHWAR DAS BHATIA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **PREMSHILA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAVI KUMAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16062/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16062
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 54 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR652N01139** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SARITA YADAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ABHISHEK YADAV** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUMIT KUMAR SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAVINDRA KUMAR SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16078/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16078
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446D00378** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SURESH VISHWAKARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GAJADHAR VISHWAKARMA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUMIT JAMBHULKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GOVARDHAN JAMBHULKAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16184/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16184
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 54 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR651S0051D** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JAINAM HEALTHCARE PARTNER- 1. PRASANNA DHANNALAL , 2. CHITRAKALA JAIN, 3. JITENDRA KUMAR JAIN , 4. PREMCHAND DHANRAJ CHOPRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **M/S SANIDHYA HEALTH CARE PARTNER 1. DR. RITESH KUMAR R SAHU 2. DR. SHILPA RITESH KUMAR SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1. SHRI R.N. SAHU 2. DR. RITESH KUMAR SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **DEED OF RETIREMENT**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, सोमवार 23 दिसंबर 2024

रेवती रमण विद्यालय में राष्ट्रीय गणित दिवस का आयोजन में छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- सूरजपुर शासकीय रेवती रमण मिश्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय सूरजपुर में 1 दिसंबर से 31 दिसंबर तक मनाए जाने वाले राष्ट्रीय गणित दिवस का समापनआज किया गया।

उक्त अवसर पर दिनांक 6 दिसंबर से 22 दिसंबर तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन अलग-अलग दिवस में किया गया। 20 दिसंबर को स्पीच कंपटीशन आयोजित किया गया जिसमें महाविद्यालय एवं विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। 21 दिसंबर को महाविद्यालय में विद्यार्थियों को श्रीनिवास रामानुजन की जीवनी पर वीडियो दिखाया गया तथा व्याख्यान आयोजित किया गया। इस व्याख्यान में राजमोहिनी देवी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अंबिकापुर के श्री सुनील गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, गणित द्वारा भारत के महान गणितज्ञ श्री श्रीनिवास रामानुजन के जीवन को विस्तार पूर्वक बताया गया तथा भारत के गणितज्ञों का योगदान भारत के विकास में किस प्रकार रहा है पर विस्तृत व्याख्या की गई। विद्यार्थियों ने व्याख्यान में पूरे समय गणितज्ञों के जीवन वृत को बताया। व्याख्यान के अंत में विद्यार्थियों ने अपनी जिज्ञासाओं को प्रश्नों के माध्यम से जाना। विषय विशेषज्ञ द्वारा विद्यार्थियों के प्रश्नों को सहजता से और सरलता पूर्वक समझाया गया। यह कार्यक्रम छत्तीसगढ़ काउंसिल ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन, डिपार्टमेंट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, गवर्नमेंट ऑफ़इंडिया, न्यू दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया है। उपरोक्त आयोजन में सभी कार्यक्रम एंसिएंट इंडियन मैथमेटिशियन एंड इट्स कंट्रीब्यूशन थीम पर आधारित रहे। इस कार्यक्रम के आयोजन में छत्तीसगढ़ काउंसिल ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी रायपुर में डिपार्मेंट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी की प्रभारी डॉ. जे.के. राय मैडम द्वारा पूरा सहयोग एवं निर्देश प्रदान किए गए। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एच. एन. दुबे द्वारा सभी विद्यार्थियों को गणित विषय के प्रति रुचि बढ़ाने एवं गणित के प्रयोग द्वारा अपने जीवन को किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है तथा भारतीय ज्ञान परंपरा को बनाए रखने और प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया। इस कार्यक्रम में शासकीय कन्या महाविद्यालय सूरजपुर के प्राचार्य श्री बृजलाल साहू उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक सुश्री प्रतिभा कश्यप, डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी, श्री सी.बी. मिश्र, डॉ. रश्मि पांडेय, डॉ. विकेश कुमार झॉ, डॉ. चंदन कुमार, डॉ. सलीम किस्पोट्टा, श्री आनंद कुमार पैकरा, एवं श्री रोहित सेठ उपस्थित रहे। महाविद्यालय में सीकास्ट के कोऑर्डिनेटर श्री टी.आर. राहंगडाले, श्री दीपचंद एक्का, सहायक प्राध्यापक गणित एवं श्री अनिल कुमार चक्रधारी सहायक प्राध्यापक भौतिक शास्त्र,द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर सफल संचालन किया गया। उक्त कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी अतिथि शिक्षकों ने अपना योगदान दिया। कार्यक्रम के अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र एवं मोमेंटो प्रदान किए गए। छात्र-छात्राओं से उपरोक्त कार्यक्रम के संबंध में फीडबैक भी प्राप्त किया गया। जिसमें विद्यार्थियों में उत्साह और गणित विषय के प्रति रुचि देखने को मिली।

एनएसएस के द्वारा बुंदिया में विशेष सात दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भटगांव के एन एस एस इकाई ने ग्राम बुंदिया मे सात दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया जिसका समापन शनिवार को किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष सात दिवसीय ग्रामीण शिविर का आयोजन डॉ एस एन पांडे कार्यक्रम समन्वयक संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा, प्रो. चंद्रभूषण मिश्रा जिला संगठक,पी आर तोमर प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भटगांव के मार्गदर्शन और संतोष कुमार गुप्ता कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना के नेतृत्व में दिनांक 15 दिसंबर 2024 से 21 दिसंबर 2024 तक शिविर का आयोजन किया गया जिसका समापन 21 दिसंबर 2024 को ग्राम पंचायत बुंदिया के शासकीय हाई स्कूल बुंदिया प्रांगण में हुआ राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष सात दिवसीय ग्रामीण शिविर का प्रतिवेदन कार्यक्रम अधिकारी संतोष कुमार गुप्ता के द्वारा प्रस्तुत किया गया।

प्रात: कालीन दिनचर्या - शिविर में दैनिक दिनचर्या की जिसमें प्रात: जागरण स्वयंसेवकों के द्वारा प्रभात फेरी निकली गईं। प्रतिदिन योगाभ्यास किया गया तत्पश्चात स्वयंसेवकों के द्वारा गांव भ्रमण कर गांव के सार्वजनिक स्थलों की साफ सफाई, पेयजल स्रोतों के आसपास के साफ-सफाई, सड़क की साफ सफाई, सोखता निर्माण कर लोगों को स्वच्छता के लिए जागरूक किया गया। स्वयंसेवकों के द्वारा रैली निकालकर नशा मुक्ति अभियान के लिए जागरूक किया गया,नशा मुक्ति अभियान में नशा करना छोड़ो,जीवन से नाता जोड़ो । छोड़ दो भाई छोड़ दो,नशा करना छोड़ दो। जैसे नारों का घोष करते हुए रैली निकाली गई । दीवार लेखन नुक्कड़ नाटक का आयोजन कर जागरूक किया गया। साक्षरता अभियान चलाया गया जिसमें लोगों को पढ़ने के लिए बेटियों को पढ़ने के लिए, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ के लिए प्रेरित किया गया। बौद्धिक परिचर्चा में विषय विशेषज्ञ द्वारा स्वयंसेवकों को जागरूक किया गया जिसमें श्री रंजीत सिंह, व्याख्याता के द्वारा कैरियर गाइडेंस, सुश्री गिरजा मानिकपुरी सी एच ओ,स्वास्थ्य केंद्र कपसरा के द्वारा स्वच्छता स्वास्थ्य विभिन्न प्रकार के रोगों, आकाश असाटी, पीजीटी डी ए वी पब्लिक स्कूल भटगांव के द्वारा स्वामी विवेकानंद जी का जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व विकास, उमेश कुमार गुप्ता प्रधान पाठक चंद्रमणि पब्लिक स्कूल बुंदिया एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक के द्वारा एनएसएस की गतिविधियों बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी, भटगांव थाना के द्वारा डिजिटल साक्षरता के लिए युवा एवं मेरा युवा भारत की विस्तार पूर्वक जानकारी, अशोक कुमार सोनवानी, वरिष्ठ कृषि अधिकारी जिला सूरजपुर के द्वारा जैविक खेती, नैतिक शिक्षा,मिट्टी नमूना एकत्रित करने की विधि, उर्वरक कीटनाशक का आदि का प्रयोग कृषि के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी, मनोज कुमार जायसवाल,जिला बाल संरक्षण अधिकारी के द्वारा किशोर न्याय अधिनियम,बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006, बाल श्रम अधिनियम 1986, लैंगिक अपराध से बालकों का संरक्षण अधिनियम 2012, नशा विरोध की जानकारी दी गई। प्रोफेसर चंद्रभूषण मिश्रा जिला संगठक सूरजपुर का मार्गदर्शन बौद्धिक सत्र में स्वयंसेवकों को प्राप्त हुआ।

संध्याकालीन सत्र- संध्याकालीन सत्र में प्रतिदिन स्वयंसेवकों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीणों को स्वच्छता,नशा,यातायात, शिक्षा पर्यावरण अनुशासन साक्षरता एकता आदि के संदेश देने वाले कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस सांस्कृतिक संध्या में ग्रामीणों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। स्वयंसेवकों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों की ग्रामीणों द्वारा सराहना की गई ।

सात दिवसीय विशेष ग्रामीण शिविर कार्यक्रम का समापन- शिविर के समापन में स्वयंसेवकों के द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं ग्रामीणों के द्वारा सरगुजिया रिछवार करमा द्वारा प्रस्तुत। किया गया। स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र व उपहार देकर सम्मानित किया गया।चारो दल के दलनायक अमन कुमार देवांगन,रवि सिंह आदित्य शर्मा,अखिलेश चंद को पुरस्कृत किया गया। सक्रिय स्वयंसेवकों में केशव कुमार ठाकुर,युवराज,रवि,मनीष रजक ,चंद्रशेखर,नरेश,सूरज, प्रिंस रोहित कुमार गुप्ता,व समस्त स्वयंसेवक सक्रिय रहे।

समापम अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती परमेश्वरी राजवाड़े प्रदेश मंत्री, अशोक सिंह जिला मंत्री, रमेश कुमार गुप्ता मंडल अध्यक्ष भटगांव भाजपा, मानिकचंद गुप्ता वरिष्ठ समाजसेवी ने अपना संबोधन देते हुए कार्यक्रम की सराहना की गई। कार्यक्रम में अफ्रोज खान वरिष्ठ पत्रकार, पार्षद आशीष बाजपेई प्राचार्य पी आर तोमर,शासकीय हाई स्कूल के प्राचार्य नबोर टोप्पो, सुखलाल, जमालु यादव वरिष्ठ नेता अहिबारन मानिकपुरी, ओंकार विधायक प्रतिनिधि, उमेश गुप्ता,श्रीमती इंदुमती सोनवानी,मोहन कुमार सिंह व्याख्याता, हरकेश जायसवाल,रंजीत सिंह,श्रीमती नसरीन बानो,श्रीमती ज्योति, प्रियंका गुप्ता, मिडिल स्कूल के स्टाफ प्राइमरी स्कूल के स्टाफ संस्था के समस्त स्टाफ ग्रामीण एवं संस्था के समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं के सहयोग से इस शिविर की सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

अतिथियों को स्मृति चिन्ह व सहभागिता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। सभी अतिथि ग्रामीण स्वयंसेवकों द्वारा बनाई गई व्यंजनों का स्वाद लिया सभी ने भोजन ग्रहण किया।

जंगल में जुआ खेलते 9 अंतर्राज्जीय जुआड़ी गिरफ्तार, 6 लाख, 32 हजार 500 रूपये, मोबाईल, बाईक व कार जप्त

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-जिले की पुलिस ने नौ अंतर्राज्जीय जुआडियों को जंगल में रेड मार कर धर दबोचा है। इनके पास से 6 लाख 32 हजार 5 सौ रूपये बरामद की गई है। मामला जिले के थाना रमकोला क्षेत्र के ग्राम खोड़ जंगल का है। जुआ खेलने की सूचना को तत्काल संज्ञान में लेते हुए टीम गठित कर जंगल भेजा गया था।

एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर के निर्देश पर जिले की पुलिस अवैध कार्यो के विरूद्ध सजगता से लगातार कार्यवाही करने में लगी हुई है। इसी बीच दिनांक 21.12.2024 के रात्रि में थाना रमकोला पुलिस को मुखबीर से सूचना मिला कि खोड़ जंगल में कई जुआड़ी हारजीत का दाव लगाकर जुआ खेल रहे है। सूचना से एसएसपी सूरजपुर को अवगत कराने पर उन्होंने थाना रमकोला की एक बड़ी पुलिस टीम गठित कर पूर्ण सावधानी के साथ भेष बदलकर मौके पर जाकर कार्यवाही करने के निर्देश दिए। पुलिस टीम ग्रामीणों का भेष धारण कर पैदल चलकर मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़-झारखण्ड के बार्डर ग्राम खोड़ जंगल पहुंची और रेड कार्यवाही कर 9 लोगों को जुआ खेलते रंगे हाथों धर दबोचा, जुआड़ियों के पास व जुआ फड़ से 6 लाख 32 हजार 5 सौ रूपये जप्त किया गया। मौके से जुआड़ियों के 9 नग मोबाईल, 6 नग मोटर सायकल एवं 1 नग कार भी जप्त किया गया है। मामले में छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम की धारा 3(2) के तहत कार्यवाही कर आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

पकड़े गए आरोपीयो में आजेश कुमार साहू पिता रामलगन साहू उम्र 34 वर्ष ग्राम जैतपुर, थाना विन्ध नगर, जिला सिंगरौली मध्यप्रदेश , अनिल कुमार पिता रामबिलास कलार उम्र 50 वर्ष निवासी ग्राम रघुनाथनगर, थाना रघुनाथनगर, जिला बलरामपुर मोहम्मद जमीर पिता स्व. सलीमद्दीन उम्र 50 वर्ष निवासी बैकुण्ठपुर, थाना बैकुण्ठपुर, जिला कोरिया ,शंकर दुसाद पिता अयोध्या दुसाद उम्र 52 वर्ष निवासी ग्राम जयंत, थाना बिंधनगर, जिला सिंगरौली मध्यप्रदेश , गुलाब चंद जायसवाल पिता स्व. मकरध्वज उम्र 45 वर्ष ग्राम रमेशपुर, थाना रघुनाथनगर, जिला बलरामपुर , अंबाली केश्वर पिता स्व. बाबुलाल जायसवाल उम्र 51 वर्ष निवासी ग्राम उरती, थाना बैढ़न जिला सिंगरौली मध्यप्रदेश , प्रदीप कुमार जायसवाल पिता रामबिलास उम्र 53 वर्ष ग्राम रघुनाथनगर, जिला बलरामपुर ,उमेश कुमार साहू पिता जल्लू साहू उम्र 34 वर्ष ग्राम मलिया, थाना मलिया, जिला सीधी मध्यप्रदेश , अवध कुमार गुर्जर पिता स्व. जगदीश प्रसाद उम्र 52 वर्ष निवासी ग्राम आसंदी, थाना रघुनाथनगर, जिला बलरामपुरशामिल है।

कार्यवाही में शामील मुस्तैद पुलिस दल कार्यवाही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो व एसडीओपी प्रतापपुर नंदिनी ठाकुर के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी रमकोला हीरालाल साहू, एएसआई विनोद सिंह, प्रधान आरक्षक संजय राजपूत, आरक्षक जीवन राम, रामा कुमार, सुनील सिंह, करन सिंह, रामप्रसाद व ईश्वर प्रसाद सक्रिय रहे।

संक्षिप्त समाचार

एसईसीएल भटगाव क्षेत्र में संपन्न हुई अंतर क्षेत्रीय शतरंज प्रतियोगिता

प्रतियोगिता में हसदेव क्षेत्र की टीम विजेता, चिरमिरी की टीम उप विजेता बनी

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- एसईसीएल भटगाव क्षेत्र के मनोरंजन गृह में एसईसीएल अंतर क्षेत्रीय शतरंज प्रतियोगिता 2024-25 का समापन क्षेत्रीय महाप्रबंधक प्रदीप कुमार के मुख्य आतिथ्य एवं विशिष्ट अतिथि कंपनी संचालन समिति के सदस्य श्रमिक नेता नाथु लाल पांडे एच एम एस,सुजीत कुमार सिंह बी एम एस,कंपनी कल्याण मंडल के सदस्य बजरंगी शाही एच एम एस अजय विश्वकर्मा एटक महेन्द्र पाल सिंह, ओबीसी एमपलाइज वेलफेयर एसोसिएशन के अनिरुद्ध कुमार चन्द्रा एवं मंगला सिंह यादव तथा एसईसीएल मुख्यालय प्रतिनिधि यशवंत सिंह थे। सभी अतिथियों का स्वागत शाल, श्रीफल एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर किया गया। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय महाप्रबंधक प्रदीप कुमार का स्वागत क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक द्वारा शाल, श्रीफल एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर किया गया। क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक बी सी सेठी का स्वागत शाल, श्रीफल एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर प्रबंधक (का.) अरुण कुमार सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डीएवी पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक बी सी सेठी के द्वारा स्वागत भाषण दिया। क्षेत्रीय महाप्रबंधक प्रदीप कुमार ने सभी विशिष्ट अतिथियों का आभार व्यक्त किया तथा आयोजकों एवं सभी खिलाडियों को प्रतियोगिता की सफलता पर बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। इस प्रतियोगिता में हसदेव क्षेत्र की टीम विजेता, चिरमिरी की टीम उप विजेता तथा दीपका क्षेत्र को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रबंधक, विभागाध्यक्ष श्रमिक नेता संजय सिंह, मनोज पाण्डेय, सतीश तिवारी, दिलीप मंडल, अजय शर्मा, संजय सिंह, सूरजन प्रजापति, राजेन्द्र सिंह देव, जगरनाथ शर्मा, दीपक मिश्रा, अशोक गुप्ता, हरेंद्र सिंह, फ्रिोज खान, नीरू श्रीवास्तव, जगरनाथ पाण्डेय सहित क्षेत्रीय संयुक्त सलाहकार समिति, क्षेत्रीय कल्याण समिति, सुरक्षा समिति, सिस्टा, एससी/एसटी/ओबीसी कौंसिल, ओ.बी.सी. एमपलाइज वेलफेयर एसोसिएशन, इनमोसा के सदस्य, श्रमिक संगठनों के पदाधिकारी तथा अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

विवेक ने कोबरा सांप को रेस्क्यू कर बचाई जान

चांपा(विश्व परिवार)। वरिष्ठ पत्रकार विवेक शर्मा ने कृष्णा लॉज के पीछे मोहल्ले में निकले कोबरा सांप को रेस्क्यू कर सुरक्षित स्थान में छोड़ दिया। उल्लेखनीय है कि पिछले कुछ दिनों से इस मोहल्ले में कोबरा सांप देख जा रहा था।मोहल्लेवासियों में कोबरा सांप को देखकर दहशत का माहौल था। चूंकि सनातन में सर्प शंकर भगवान के गले का हार है ,और पूजनीय है इसलिए उसे किसी तरह की चोट मोहल्लेवासियों ने नहीं पहुंचाई।मोहल्ले के पवन तिवारी ने इसकी जानकारी विवेक शर्मा को दी। जिस पर विवेक शर्मा ने लकड़ी के सहारे कोबरा सांप को बोर में भरकर दूर नदी किनारे सुरक्षित स्थान में छोड़ दिया। पत्रकार विवेक शर्मा ने बताया कि कोबरा को देखकर आसपास के लोग काफी डर गए थे। कोबरा सांप लगभग 6 से 7 फीट लंबा था। विवेक शर्मा कई सालों से सांप पकड़ उसे सुरक्षित स्थान में छोड़ देते है।सांप पकड़ने के लिए उन्होंने कही कोई प्रशिक्षण नहीं लिया है। कुछ दिन पूर्व ही अनिल मोदी के घर में निकले कोबरा को रेस्क्यू किया था।विवेक बताते है उनके सांप के शौक से घर वाले काफी नाराज रहते है, लेकिन मुझे सांप निर्दोष और मासूम लगते है इसलिए मुझे उन्हे बचाकर सुरक्षित स्थान पर छोड़ना अच्छा लगता है।विवेक सांपों को स्नेक कैचिंग स्टिक के बिना ही रेस्क्यू कर लेते है।

ट्रक-यात्री बस के बीच भिड़ंत दर्जन भर यात्री घायल

जांजगीर-चांपा(विश्व परिवार)। जिले के नवागढ़ में आज सुबह ट्रक और यात्री बस के बीच जोरदार भिड़ंत हो गई. बताया जा रहा है कि बस यात्रियों को लेकर केरा से जांजगीर की ओर जा रही थी. इसी बीच राछाभाटा के पास बस और ट्रक के बीच टक्कर हुई. घटना से यात्रीयों में हड़कंप मच गया है.

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर सोमवार 23 दिसंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय आरोप-प्रत्यारोप की भेंट चढ़ा संविधान का सत्र

भारत को नुकसान जवाबदेही भाजपा की ही होगी.....

देश के अंदर सियासी तू तू-मैं मैं दीगर पहलू है, मगर जिस अमेरिका के साथ भारत का निकट संबंध बनाना मोदी सरकार की प्राथमिकता रही है, उसी पर अब इतना गंभीर इल्जाम सत्ताधारी भाजपा ने लगा दिया है। भाजपा सत्ताधारी पार्टी है। उसे यह ख्याल अवश्य रखना चाहिए कि वह जो बोलती है, उससे भारत सरकार की राय से जोड़ कर देखा जाएगा। देश के अंदर सियासी चर्चा का स्तर इतना गिर चुका है कि अब कौन, क्या बोलता है, उस पर ज्यादा माथापच्ची करने की जरूरत महसूस नहीं होती। लेकिन जो बातें भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित कर सकती हैं, उन मामलों में अपेक्षा अवश्य रहती है कि सत्ताधारी दल के नेता जिम्मेदारी से बोलेंगे। वे ख्याल रखेंगे कि उनकी बातों का दूरगामी प्रभाव हो सकता है। इसीलिए भाजपा ने जिस तरह अब अमेरिका के विदेश मंत्रालय और डीप स्टेट' पर निशाना साधा है, उससे व्यग्रता पैदा होती है। पार्टी के मुताबिक अमेरिकी विदेश मंत्रालय और डीप स्टेट' के कुछ तत्व कुछ खोजी पत्रकारों और विपक्ष के नेता राहुल गांधी के साथ मिल कर भारत को अस्थिर करने में जुटे हुए हैं। ताजा संदर्भ अडानी समूह के खिलाफ अमेरिका में दायर मुकदमे का है, जिससे पार्टी ने पत्रकारों के समूह ऑर्गनाइडन्ड क्राइम एंड करप्शन रिपोर्टिंग प्रोजेक्ट की इस समूह के बारे में कुछ समय पहले आई रिपोर्ट को जोड़ दिया है। चूंकि कांग्रेस, खास कर राहुल गांधी ने इस मामले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घेरने की कोशिश की है, तो भाजपा ने इसका जवाब इस ताजा हमले के साथ दिया है। स्पष्टत आरोप का पूरा आधार परिस्थितिजन्य है। एक से दूसरे तार को जोड़ते हुए भाजपा इस नतीजे पर पहुंच गई है कि भारत को अस्थिर करने की बड़ी साजिश रची गई है और उच्चतम स्तर के देशद्रोही (यह आरोप संसद में लगाया गया) राहुल गांधी उसका हिस्सा बन गए हैं। देश के अंदर सियासी तू तू-मैं मैं दीगर पहलू है, मगर जिस अमेरिका के साथ भारत का निकट संबंध बनाना मोदी सरकार की प्राथमिकता रही है, उसी पर अब इतना गंभीर इल्जाम सत्ताधारी पार्टी ने लगा दिया है। यह आरोप इतना गंभीर है कि भाजपा से यह मांग जरूर की जाएगी कि वह साजिश के बारे में ठोस सबूत देश को बताए। वरना, इससे अंतरराष्ट्रीय दायरे में भारत को जो नुकसान होगा, उसकी पूरी जवाबदेही भाजपा की ही होगी।

ललित गर्ग

जहां विपक्ष ने आरक्षण विरोधी आरोपों को दोहराते हुए कहा कि सत्ता पक्ष मूल रूप से आरक्षण की व्यवस्था के खिलाफहै और जब-तब दबे-छुपे ढंग से उसकी यह अंदरूनी इच्छा संघ और पार्टी के छोटे-बड़े नेताओं के बयानों से जाहिर होती रहती है। सर्वोच्च लोकतांत्रिक सदन लोकसभा संजीदा बहस की जगह हंगामे का केंद्र बनती जा रही है, जो दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण है। जहां जनता से जुड़े मुद्दों पर सार्थक बहस की जगह शोर शराबा, हंगामा और सदन का स्थगित होना ही आम होता जा रहा है। यही बात लोकसभा में संविधान को लेकर हुई दो दिनों की बहस की चर्चा के दौरान देखने को मिली। संविधान निर्माण के 75वें वर्ष पर हुई यह चर्चा भी छिछालेदार, आरोप-प्रत्यारोप एवं उच्छृंखलता का माध्यम बनी, जबकि संविधान पर इस चर्चा से जनता को एवं देश को सही दिशा मिलनी चाहिए थी, संविधान के प्रति प्रतिबद्धता दोहरायी जानी चाहिए थी। संविधान जैसे सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय पर सार्थक बहस न होना लोकतंत्र को कमजोर करने एवं लोकतंत्र रूपी उजालों पर कालिख पोतना ही है। सत्तापक्ष और विपक्ष ने संविधान पर चर्चा के बहाने एक-दूसरे को कठघरे में खड़ा करने का काम करके आकाश पर पैबंद लगाने एवं सछिद्र नाव पर सवार होकर संविधान रूपी सागर की यात्रा करने का ही संकेत देकर देश की जनता को निराश ही किया है। भले ही अपने तर्कों एवं तथ्यों से पक्ष एवं विपक्ष ने अतीत के प्रसंगों और विषयों को अधिक रेखांकित किया गया हो। निश्चित ही सत्ता पक्ष और विपक्ष के अलग-अलग नजरियों को स्पष्ट करने वाली यह बहस न केवल समकालीन राजनीतिक मुद्दों पर बल्कि लोकतंत्र, समाज और इतिहास से जुड़े कई महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करने वाली रही, लेकिन इस बहस में आरक्षण, सावरकर, मनुस्मृति और अदाणी को शामिल करना विपक्ष की बुद्धि का दिवालियापन ही कहा जा सकता है। इनमें से अनेक प्रसंग और विषय ऐसे थे, जिन पर पहले भी किसी न किसी बहाने संसद के भीतर या बाहर चर्चा होती रही है। यह पहले से दिख रहा था कि विपक्ष संविधान पर चर्चा के बहाने यह बताने की कोशिश करेगा कि संविधान खतरे में है। लेकिन यह समझाने के लिए विपक्षी नेताओं के पास कोई मजबूत तर्क नहीं थे, वे यह स्पष्ट करने में विफल रहे कि आखिर संविधान को खतरा कैसे है? कांग्रेस संविधान पर चर्चा करते समय यह भी भूल गई कि वह यदि मोदी सरकार के एक दशक के कार्यकाल की गलतियां गिनायेगी तो उसे भी अपने चार दशकों के कार्यकाल की गलतियों हिसाब देना होगा। संविधान पर चर्चा के दौरान जैसे विपक्ष ने सत्तापक्ष पर आरोपों की झड़ी लगाई वैसे ही सत्तापक्ष ने भी विपक्ष पर आरोपों की बौछार की। लेकिन यह सब करते हुए पक्ष एवं विपक्ष ने संविधान की विशेषताओं को उजागर करने की सकारात्मकता की बजाय विध्वंसात्मक नीति का ही सहारा लिया। जहां विपक्ष ने आरक्षण विरोधी आरोपों को दोहराते हुए कहा कि सत्ता पक्ष मूल रूप से आरक्षण की व्यवस्था के खिलाफहै और जब-तब दबे-छुपे ढंग से उसकी यह अंदरूनी इच्छा संघ और पार्टी के छोटे-बड़े नेताओं के बयानों से जाहिर होती रहती है। जवाब में खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट किया कि आरक्षण की जो व्यवस्था अभी लागू है, उनकी सरकार उस पर आंच नहीं आने देगी, लेकिन धर्म के आधार पर आरक्षण देने की कोई भी कोशिश वह सफल नहीं होने देगी। जाहिर है, इसमें मतदाताओं को अपनी पाली में करने की दोनों पक्षों की कोशिश भी देखी और पहचानी जा सकती है। सत्तापक्ष और विपक्ष ने संविधान पर चर्चा के बहाने एक-दूसरे को कठघरे में खड़ा करने का काम ईर्ष्या और मात्सर्य की भावना से किया, जो तोड़-फोड़ की नीति में विश्वास को ही बल दे रहा था। लगता है कि विपक्षी नेता यह समझने को तैयार नहीं कि लोकसभा चुनाव के समय उन्होंने संविधान के खतरे में होने का जो हौवा खड़ा किया था, वह अब असरकारी नहीं रह गया है। विपक्ष के रवैये से यही लगा कि उसे यह बुनियादी बात समझने में मुश्किल हो रही है कि जाति जनगणना कराने-न कराने से संविधान की सेहत पर क्या असर पड़ने वाला है? कांग्रेस के लिये यदि जाति जनगणना इतनी ही आवश्यक है तो नेहरू, इंदिरा, राजीव गांधी और मनमोहन सिंह के कार्यकाल में क्यों नहीं कराई गई? अच्छा होता कि कांग्रेस नेता पहले इस प्रश्न का जवाब देते और फिर जाति जनगणना की आवश्यकता रेखांकित करते। लेकिन विपक्ष एवं विशेषकर कांग्रेस ऐसे मुद्दों को उछालकर खुद ही निरुत्तर होती रही है। पूरी बहस में महापुरुषों को घसीटने का बिंदु ऐसा था जो न केवल बहस का जायका बिगाड़ने वाला कहा जा सकता है बल्कि यह निरुद्देश्यता एवं स्तरहीनता को ही दर्शाने वाला कहा जा सकता है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों को यह भी बताना चाहिए कि संविधान पर बहस करते समय सावरकर का नाम लेना और मनुस्मृति दिखाना क्यों आवश्यक हो गया था? कांग्रेस को यह समझ आ जाए तो बेहतर कि सावरकर, मनुस्मृति और अदाणी का उल्लेख करते रहने से उसे कोई राजनीतिक लाभ नहीं मिलने वाला। लोकतंत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष की तू-तू मैं-मैं चलती रहती है, लेकिन इसमें महापुरुषों को घसीटना अब बंद होना चाहिए। हमारे हर महापुरुष ने अपने समय, समाज और समझ की सीमाओं में रहते हुए कुछ ऐसा योगदान किया, जिसके लिए हम कृतज्ञ महसूस करते हैं। इसका मतलब उनके हर विचार से सहमति रखना या उनके हर कृत्य को समर्थन देना नहीं है। लेकिन उनके प्रति समाज की या उसके एक हिस्से की भी भावनाओं का सम्मान हमारी राजनीति का हिस्सा होना चाहिए। सत्ता पक्ष ने इमरजेंसी का पुराना आरोप भी उछला, लेकिन नई बात यह रही कि इस पर बचाव की मुद्रा अपनाने के बजाय कांग्रेस इस तर्क के साथ सामने आई है कि भाजपा को भी अपनी गलतियों के लिए माफी मांगनी चाहिए। लेकिन यहां इमरजेंसी जैसी कोई भाजपा की गलती बताने में कांग्रेस नाकाम ही रही। एक और बड़ी विडम्बना यह देखने को मिली कि संविधान निर्माण को किसी दल विशेष की देन कहा गया जबकि संविधान निर्माण में सभी दलों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने विपक्ष पर विशेषतौर पर कांग्रेस पर जमकर हमला बोला और कहा कि पिछले कुछ वर्षों से देश में ऐसा माहौल बनाया गया है कि संविधान एक पार्टी की विशेष देन है, जबकि वास्तविकता यह है कि संविधान के निर्माण में बहुत से लोगों की भूमिका रही है जिसे पूरी तरह से नकार दिया गया। संविधान सभा ने जो संविधान तैयार किया था, वह केवल कानूनी दस्तावेज नहीं था, बल्कि वह जनआकांक्षाओं का प्रतिबिंब था। उन्होंने कहा कि संविधान पार्टी विशेष नहीं बल्कि राष्ट्र का है, पार्टी विशेष ने संविधान निर्माण को हाईजैक कर लिया। निश्चित ही संविधान देश का सुरक्षा कवच है। लोकसभा में संविधान पर बहस की मूल आवश्यकता उन कारणों पर बुनियादी चर्चा की थी जिनके चलते संविधान निर्माताओं के सपने अभी भी अधूरे हैं और नियम-कानूनों पर संविधान की मूल भावना के अनुरूप पालन नहीं हो पा रहा है। बहरहाल, इसमें शक नहीं कि बहस का केंद्र यही सवाल रहा कि कौन संविधान और संवैधानिक मूल्यों को लेकर समर्पित है और कौन इस पर दोहरा खेल खेल रहा है? नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने जहां सावरकर के सहारे भाजपा पर निशाना साधा वहीं प्रधानमंत्री मोदी ने देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू की गलतियां गिनाईं। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने भाजपा पर हमला करते हुए कहा कि भाजपा ने संविधान के रूप में मिले सुरक्षा कवच को तोड़ा है। भारत का संविधान, संघ का विधान नहीं है। इसी बात को दोहराते हुए अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा और कहा कि आज देश की सीमाएं सुरक्षित नहीं हैं।

आलेख

रोज़ एक तस्वीरः पिता का बेटी के बचपन को अमर करने का सफर

एक सामान्य जीवन जीने वाले पिता, रवींद्रने पिछले बारह महीनों में अपनी एक साल की बेटी जीविशा की लगभग 13,000 तस्वीरें खींची हैं। यह कोई मामूली बात नहीं है। जहां हम डिजिटल युग में तस्वीरों को क्षणिक स्मृति मानते हैं, रवींद्र के लिए यह उनके दिल के बेहद करीब है। रवींद्र कहते हैं किजब जीविशा पहली बार मुस्कुराई, पहली बार बैठी, और पहली बार अपने नन्हे कदमों से चली, मैं इन पलों को केवल याद नहीं करना चाहता था, मैं इन्हें सहेजना चाहता था, । हर दिन, हर पल के साथ, उन्होंने कैमरा उठाया और अपनी बेटी के मासूम पलों को कैद किया। चाहे वह सुबह की हंसी हो, बारिश में खेलने की खुशी, या रात में सोते समय उसके शांत चेहरे की तस्वीर—हर फोटो में एक कहानी छिपी है। उनकी पत्नी लता कहती हैं,वो इसे सिर्फ एक शौक नहीं मानते, यह उनके लिए जीविशा के बचपन को हमेशा अपने पास रखने का एक तरीका है।

केवल तस्वीरें नहीं हैं। यह पिता का अपनी बेटी के बचपन को अमर करने का प्रयास है।मैं चाहता हूं कि जब जीविशा बड़ी हो और इन तस्वीरों को देखे, तो उसे अपने बचपन की मासूमियत और हमारे प्यार का एहसास हो, रवींद्र भावुक होकर कहते हैं।

बचपन की यादों का पुलिंदा

जब जीविशा एक दिन बड़ी होगी और इन तस्वीरों को देखेगी, तो ये केवल तस्वीरें नहीं होंगी। ये उसके बचपन की महक होंगी, वह पल होंगे जो वह खुद याद नहीं कर सकती लेकिन महसूस कर सकेगी। सोचिए, जब वह अपने माता-पिता के बिना इस दुनिया में होगी, तो क्या यह तस्वीरें उसके लिए एक सहारा नहीं बनेंगी? जब वह अकेली होगी, ये तस्वीरें उसके माता-पिता के प्यार और उनकी मौजूदगी का एहसास कराएंगी। रवींद्र मानते हैं,हमेशा हमारे साथ रहना संभव नहीं है, लेकिन इन तस्वीरों के जरिए मैं और लता हमेशा उसके पास रहेंगे। शायद वह हमें कभी खोने का गम महसूस न करे।

क्या यह एक रिकॉर्ड है?

दुनिया में रोज़ाना नए रिकॉर्ड बनते हैं। कुछ लोग अपनी शारीरिक क्षमता दिखाते हैं, तो कुछ अपनी बौद्धिक क्षमता। रवींद्र का यह प्रयास किसी रिकॉर्ड की परिभाषा में फिट हो या न हो, लेकिन यह एक पिता के सच्चे और गहरे प्रेम का प्रमाण ज़रूर है। जहां कुछ लोग रवींद्र के इस जुनून को ओवर-एंबिशन कह सकते हैं, वहीं बहुत से माता-पिता इसे एक प्रेरणा मानेंगे। मैं चाहता हूं कि यह कहानी हर माता-पिता को यह एहसास कराए कि हमारे बच्चों का बचपन कितना कीमती है।

जीविशा के लिए एक तोहफा

हर तस्वीर एक तोहफा है। जब जीविशा पहली बार अपने बालों में सफेदी देखेगी और इन तस्वीरों को पलटेगी, तो उसके चेहरे पर मुस्कान होगी और आंखों में नमी। रवींद्र के इस प्रयास ने यह साबित कर दिया है कि पिता का प्यार शब्दों से परे है। यह कहानी केवल तस्वीरों की नहीं, बल्कि एक पिता के अपने बच्चे के प्रति निस्वार्थ प्रेम और उसके बचपन को हमेशा के लिए संजोने के भाव की है। क्या आप भी अपने बच्चों के लिए ऐसा कुछ कर रहे हैं?

न नेशन,वन इलेक्शन से विकास की नई ऊंचाइयों को हासिल करेगा देश

एस. सुनील

सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि हमेशा चलने वाले चुनावों पर विराम लग जाएगा। सरकारों का ध्यान विकास कार्यों की ओर होगा। आचार संहिता की वजह से विकास कार्य ठप्प नहीं होंगे। और सबसे ऊपर हर बार चुनाव में होने वाले बेहिसाब खर्चों पर लगाम लगेगी। चुनाव आयोग से लेकर राजनीतिक दलों का चुनावों पर बेहिसाब खर्च होता है। एक साथ चुनाव से इन खर्चों में कटौती होगी। सुरक्षा बलों को भी लगातार इस राज्य से उस राज्य तक यात्रा करनी पड़ती है। आम लोगों का ध्यान भी चुनाव पर लगा रहता है। यह सब कुछ एक निर्णय से बदल जाएगा। देश सचमुच बदल रहा है। न सिर्फ बदल रहा है, बल्कि शक्तिशाली हो रहा है। लोकतंत्र सशक्त हो रहा है। वैश्विक स्तर पर देश का मान बढ़ रहा है। देश में आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता आई है। अभी जिस समय देश संविधान अंगीकार करने के 75 साल पूरे होने का उत्सव मना रहा है, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने एक और ऐतिहासिक निर्णय किया है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने एक देश, एक चुनाव' के लिए बनाए गए दो विधेयक को मंजूरी दे दी है। संसद के शीतकालीन सत्र में इसके लिए सरकार दो विधेयक पेश करेगी। इनके जरिए संविधान के अनुच्छेद 82ए, 83, 172 और 327 में संशोधन का प्रस्ताव रखा जाएगा। इससे लोकसभा और सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने और लोकसभा व सभी विधानसभाओं के कार्यकाल से जुड़े जरूरी बदलाव किए जाएंगे। केंद्र सरकार ने इससे पहले सितंबर में पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली उच्चस्तरीय समिति की रिपोर्ट मंजूर कर ली थी, जिसकी सिफारिशों के आधार पर ये विधेयक तैयार किए गए हैं। श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली समिति ने सभी संबंधित पक्षों के साथ विचार विमर्श किया था। उनकी समिति के सामने अनेक विपक्षी पार्टियों ने सारे चुनाव एक साथ कराने के प्रस्ताव का विरोध किया था, लेकिन ज्यादातर पार्टियां इस विचार के समर्थन में थीं। चुनाव आयोग और आम लोगों से भी समिति ने राय ली थी। इसके बावजूद सरकार अपने संपूर्ण बहुमत के दम पर एकतरफा तरीके से इन विधेयकों को नहीं पास कराने जा रही है। सरकार इस मामले में आम राय बनाने का प्रयास कर रही है। इसलिए संविधान संशोधन के विधेयक पेश करने के बाद उसे संयुक्त संसदीय समिति यानी जेपीसी को भेजा जा सकता है, जहां सभी पार्टियों के सांसद इस पर विचार करेंगे। यह समिति सभी संबंधित पक्षों से सलाह मशविरा करेगी और आम लोगों की राय भी लेगी। उसके बाद सहमति बना कर इसे पास कराया जाएगा। वैसे सरकार जब चाहती तब इसे पास करा सकती थी क्योंकि ये साधारण संशोधन हैं, जिनके लिए संसद में साधारण बहुमत की जरुरत है और राज्यों की विधानसभा से मंजूरी लेने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी सरकार आम सहमति का रास्ता अपनाएगी। जिस समय श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में समिति बनाई गई थी तभी से इसे लेकर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। विपक्ष पूछ रहा है कि इसका क्रियान्वयन कैसे होगा? अगर 2029 के लोकसभा चुनाव के साथ सभी राज्यों के विधानसभाओं के चुनाव कराने हैं तो अगले चार साल में होने वाले विधानसभा चुनावों का क्या होगा? यह भी पूछा जा रहा है कि अगर लोकसभा और सभी विधानसभाओं का कार्यकाल तय कर दिया जाएगा तो बीच में सरकार ने बहुमत गंवाया या सरकार गिरी तब क्या होगा? क्या वहां राष्ट्रपति शासन लगा रहेगा और अगले लोकसभा चुनाव के साथ ही वहां चुनाव होगा? वैसे इन सभी सवालों का जवाब सरकार की ओर से प्रस्तावित विधेयक में मिल जाएगा। परंतु अगर राजनीतिक पूर्वाग्रह छोड़ दें तो इन सवालों के जवाब बहुत मुश्किल नहीं हैं। कुछ विधानसभाओं के कार्यकाल बढ़ा कर और कुछ के कार्यकाल घटा कर सभी विधानसभाओं के चुनाव लोकसभा के साथ कराए जा सकते हैं। जहां तक बीच में सरकार गिरने का सवाल है तो पिछले काफी समय से मध्यावधि चुनाव का चलन समाप्त हो गया है। पिछले एक दशक से ज्यादा समय से दिल्ली के एक अपवाद को छोड़ दें तो किसी राज्य में मध्यावधि चुनाव की नौबत नहीं आई है। यह लोकतंत्र की परिपक्वता का प्रतीक है। फिर भी इस संभावना को देखते हुए सकारात्मक अविश्वास प्रस्ताव का प्रावधान किया जा सकता है। यानी सरकार गिरने के साथ ही नई सरकार बनाने का प्रस्ताव भी रखा जाए। इसके बावजूद अगर कहीं सरकार गिरती है और नई सरकार नहीं बनती है तो वहां बचे हुए कार्यकाल के लिए चुनाव कराया जा सकता है। अगर इतने बड़े ऐतिहासिक निर्णय पर अमल करना है तो छोटे छोटे कुछ अपवाद बनाने होंगे। विपक्ष की ओर से पहले दिन से इस प्रस्ताव का विरोध किया जा रहा है। विपक्ष का विरोध सिर्फ इस कारण से है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसका प्रस्ताव किया है। विपक्ष को सरकार के हर प्रस्ताव और हर अच्छी पहल का विरोध करना है इसलिए वह विरोध कर रही है। विरोध में विपक्ष की ओर से ऐसे तर्क दिए जा रहे हैं, जिनसे खुद ही विपक्षी पार्टियां कठघरे में खड़ी होती हैं। कांग्रेस और दूसरी विपक्षी पार्टियां लोकसभा के साथ सभी राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव को लोकतंत्र विरोधी बता रही हैं। प्रश्न है कि पूरे देश में एक साथ चुनाव कराना लोकतंत्र विरोधी कैसे है और अगर यह लोकतंत्र विरोधी है तो स्वतंत्रता के बाद करीब 20 साल तक चार लोकसभा चुनाव और सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कैसे हुए? क्या देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस के दूसरे नेता लोकतंत्र विरोधी कार्य कर रहे थे? ध्यान रहे आजादी के बाद 1952 में हुए पहले चुनाव से लेकर 1967 के चौथे चुनाव तक देश के सारे चुनाव एक साथ होते थे। उस समय भी अगर कांग्रेस पार्टी ने अपनी संविधान विरोधी सोच में गैर कांग्रेसी राज्य सरकारों को बरखास्त करना नहीं शुरू किया होता तो आगे भी एक साथ चुनाव की प्रक्रिया चलती रहती। लेकिन कांग्रेस को बरदाश्त नहीं हुआ कि राज्यों में उसको हरा कर गैर कांग्रेसी सरकारें कैसे बन गई हैं। सो, उसने अनुच्छेद 356 का दुरुपयोग करके उन सरकारों को बरखास्त किया, जिसकी वजह से एक साथ चुनाव का चक्र टूट गया। उसके बाद गठबंधन की राजनीति के दौर में केंद्र में और राज्यों में भी एक के बाद एक मध्यावधि चुनाव हुए।

प्रयागराज महाकुंभ सामाजिक-सांस्कृतिक मायने को ऐसे समझिए

कमलेश पांडे

हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह पवित्र त्योहार बारह वर्षों में चार बार मनाया जाता है, जो भारत के चार प्रतिष्ठित शहरों हरिद्वार, उज्जैन, नासिक एवं प्रयागराज में बहने वाली सबसे पवित्र नदियों, गंगा, शिप्रा और गोदावरी के बीच घूमता है। कहना न होगा कि इनमें से प्रत्येक शहर सबसे पवित्र नदियों गंगा, शिप्रा, गोदावरी और खासकर प्रयागराज (पूर्वनाम इलाहाबाद) गंगा, यमुना एवं पौराणिक सरस्वती के संगम के किनारे स्थित हैं। आगामी 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक प्रयागराज एक बार फिर इस शानदार उत्सव का केंद्र बन जाएगा, जो लाखों तीर्थयात्रियों और आगंतुकों को भक्ति, एकता और भारत की आध्यात्मिक विरासत की जीवंत अभिव्यक्ति को देखने के लिए आकर्षित करेगा। इसलिए इसके राजनीतिक प्रभावों से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। इस मौके पर यदि हमारा नेतृत्व संवैधानिक राज के साथ-साथ सनातनी राज जैसी जनभावनाओं का भी बीजारोपण करे, तो यह भारत भूमि/आसेतु हिमालय के लिए बहुत बड़ा उपकार होगा। क्योंकि हमारी धर्मनिरपेक्ष नीतियां हीं हमारे बन्धु-बांधवों के दमन और उत्पीड़न की पर्याय बनती जा रही हैं। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि आसेतु हिमालयी देशों में हिन्दू जनमानस प्रताड़ित हो रहा है और हमारे नागा साधु भी इस स्थिति से उन्हें निजात नहीं दिलवा पा रहे हैं। भारत सरकार भी स्पष्ट और आक्रामक नीति से बच रही है, क्योंकि उसकी धर्मनिरपेक्षता ने हिन्दू उत्पीड़न को अघोषित गारंटी प्रदान करती जा रही है। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है। इस पर हमारे साधु-संतों को गम्भीर होना होगा और धर्मनिरपेक्ष सरकार पर दबाव बनाना होगा। विश्व जनमानस पर भी इसका दबाव पड़े, यह चिंतन व अभिव्यक्ति शैली भी हमें विकसित करनी होगी। अतिक्रमित हिन्दू मंदिरों के पुनरुद्धार का मसला भी यहां उठना चाहिए, ताकि सबके बीच एक सकारात्मक संदेश जाए। इतिहास के पापों के प्रक्षालन का और कोई विकल्प नहीं हो सकता है। इसके अलावा, और भी मुद्दे हैं, जिन पर इसी बहाने एक सकारात्मक बहस छिड़नी चाहिए। वैसे तो इस भव्य आयोजन में धार्मिक अनुष्ठानों से परे खगोल विज्ञान, ज्योतिष, सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं और आध्यात्मिक ज्ञान का समृद्ध मिश्रण शामिल है। क्योंकि इस अवसर पर लाखों भक्त, तपस्वी और तपस्वी त्रिवेणी संगम में पवित्र स्नान सहित पवित्र अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए एकत्र होते हैं। इसलिए सनातनी हितों के सवाल पर भी यहां मौखिक विमर्श शुरू होना चाहिए। यहां

आने वाले लोग सनातन धर्म के कट्टर अनुयायी होते हैं, इसलिए सनातनी संवेदनाओं को समझते उन्हें देर नहीं लगेगी। जब वो समझेंगे, तभी औरों को भी समझा पाएंगे।यह पुण्य कार्य होगा। यहां आने वाले भक्तों का भी मानना है कि महाकुंभ स्नान से उनके पाप धुल जाते हैं और उन्हें आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है। इस प्रकार महाकुंभ मेला न केवल भारत की गहरी जड़ें जमा चुकी विरासत का प्रतिनिधित्व करता है बल्कि आंतरिक शांति, आत्म-बोध और सामूहिक एकता की शाश्वत मानवीय खोज को भी प्रदर्शित करता है। शाही स्नान: महाकुंभ मेला अनुष्ठानों का एक भव्य आयोजन है, इन सभी में स्नान सबसे महत्वपूर्ण है। त्रिवेणी संगम पर आयोजित इस पवित्र समागम में भाग लेने के लिए लाखों तीर्थयात्री एकत्रित होते हैं, जो इसमें विश्वास रखते हैं कि पवित्र जल में डुबकी लगाने से व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो सकता है। माना जाता है कि शुद्धिकरण का यह कार्य व्यक्ति और उनके पूर्वजों दोनों को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त कर देता है, जिससे अंततः मोक्ष या आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है। स्नान अनुष्ठान के साथ-साथ तीर्थयात्री पवित्र नदी के किनारे पूजा-पाठ में भी शामिल होते हैं और साधुओं एवं संतों के नेतृत्व में ज्ञानवर्धक प्रवचनों में भाग लेते हैं, जिससे जीवन के अनुभव में आध्यात्मिक गहराई जुड़ जाती है। वैसे तो पूरे प्रयागराज महाकुंभ के दौरान पवित्र जल में डुबकी लगाना पवित्र माना जाता है, लेकिन कुछ तिथियां विशेष महत्व रखती हैं, जैसे पौष पूर्णिमा (13 जनवरी), मकर संक्रांति (14 जनवरी) आदि। इन तिथियों पर संतों, उनके शिष्यों और विभिन्न अखाड़ों (आध्यात्मिक क्रम में) के सदस्यों के साथ भव्य जुलूस निकलते हैं, जो शाही स्नान या 'राजयोगी स्नान' के नाम से जाने जाने वाले भव्य अनुष्ठान में भाग लेते हैं। यह महाकुंभ मेले की आधिकारिक शुरुआत का प्रतीक है और इस आयोजन का मुख्य आकर्षण है। शाही स्नान की परंपरा इस विश्वास पर आधारित है कि जो लोग अनुष्ठान में भाग लेते हैं उन्हें पवित्र जल में डुबकी लगाने पर पुण्य कर्मों का आशीर्वाद मिलता है और उनसे पहले आए संतों का गहन ज्ञान प्राप्त होता है। आरती: नदी के किनारों पर मंत्रमुग्ध कर देने वाला गंगा आरती समागम में आए लोगों के लिए एक अविस्मरणीय क्षण होता है। इस पवित्र अनुष्ठान के दौरान पुजारी जगमगाते दीपक पकड़कर दृश्य अभिनय प्रस्तुत करते हुए कठिन धर्मक्रिया करते हैं। गंगा आरती हजारों भक्तों को आकर्षित करती है, जिससे पवित्र नदी के प्रति गहरी भक्ति और श्रद्धा जागृत होती है। कल्पवास: कल्पवास महाकुंभ उत्सव का एक गहरा लेकिन कम ज्ञात पहलू है, जो साधकों को आध्यात्मिक अनुशासन, तपस्या और उच्च चेतना के लिए समर्पित एक अनुष्ठान प्रदान करता है। संस्कृत से उत्पन्न 'कल्प' का अर्थ है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, सोमवार 23 दिसम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दिनांक 25 और 26 दिसंबर 2024 को श्री पार्श्वनाथ जन्म जयंती महामहोत्सव का होगा आयोजन

अटरु/बारां (विश्व परिवार)। श्री पार्श्वनाथ दिंगबर जैन मंदिर खेडलीगंज अटरु में दिनांक 25 एवं 26 दिसंबर 2024 को श्री पार्श्वनाथ जन्म जयंती महा महोत्सव का आयोजन पंडित मनोज जैन शास्त्री के निर्देशिन में हर्षोल्लास के वातावरण में आयोजित किया जायेगा। मंदिर समिति के अध्यक्ष रौनक अजमेरा महामंत्री श्रेयांश लुहाड़िया कोषाध्यक्ष मोहित अजमेरा ने कि दिनांक 25 दिसंबर को सायकल महाआरती एवं 48 मंगल दीपकों के माध्यम से भक्तामर पाठ होगा। दिनांक 26 दिसंबर को प्रात:काल शिखर पर विराजमान प्रतिमाओं पर अभिषेक और शांतिधारा के बाद ध्वजारोहण की क्रियाएं होगी। मंदिर समिति के मंत्री प्रबल अजमेरा उपाध्यक्ष अर्पित लुहाड़िया ने राष्ट्रीय मीडिया पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार को जानकारी देते हुवे बताया कि इस अवसर पर जुलूस विशाल घटयात्रा अटरु के प्रमुख चौराहों से होते हुवे मंदिर परिसर में आएगी। इस घटयात्रा में महिलाएं केसरिया परिधान में सिर पर मंगल कलश लेकर चलेगी। घट यात्रा का प्रमुख आकर्षण एक महिला बैंड होगा। साथ ही घोड़े गाजे बाजे के साथ श्रद्धालुगण श्रद्धा भक्ति से नृत्य करते हुवे चलेंगे। यात्रा में भगवान के माता पिता रथ में सवार होगे। अभिषेक शांतिधारा के बाद भगवान पार्श्व नाथ की पूजन श्रद्धा भक्ति भाव ओर समर्पण के साथ संगीत की सुमधुर धुनों के साथ आयोजित होगी। निर्माण और सलाहकार मंत्रीअंकुश लुहाड़िया ओर सांस्कृतिक मंत्री खनिशअजमेरा ने बताया कि पूजन के बाद 108 मंगल दीपकों आरती के बाद सभी श्रावक श्रेष्ठि जनो के वात्सल्य भोज की उत्तम व्यवस्था रहेगी। **-पारस जैन पार्श्वमणि**

नांदणी में पंचकल्याणक महामहोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण पर, आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंघ का होगा 26 दिसम्बर को मंगल प्रवेश

नांदणी (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक स्वामीजी, नांदणी ने खा की-आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी ससंघ के सानिध्य में नांदणी में होगा भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव। दिनांक 1 जनवरी 2025 से 9 जनवरी 2025 तक नांदणी में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज जी ससंघ के सानिध्य में और स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक स्वामीजी, नांदणी के अधिनेतृत्व में संपन्न होगा। नांदणी में निर्मित वृषभाचल जैन तीर्थ पर 1 जनवरी 2025 से 9 जनवरी 2025 तक आचार्य विशुद्ध सागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और महा मस्तकाभिषेक की तैयारिया अंतिम चरण में हैं।

वृषभाचल नांदणी पर भगवान आदिनाथ बृहन्मुर्ती के बाजु में भ. मुनीसुव्रतनाथ तीर्थंकर की 21 फूट की पद्मासन प्रतिमा का पंचकल्याणक, नांदणी मठ में भ. आदिनाथ बस्ती के शिखर में नूतन मूर्ती का, गांव में भ. पार्श्वनाथ मंदिर के शिखर में भ. पार्श्वनाथ की प्रतिमा और स्वस्तिश्री जिनसेन मठ में मुख्य मंदिर के मुलानायक भ. आदिनाथ मंदिर के बाजू में (दक्षिण दिशा को) 9 तीर्थंकर मंदिर का निर्माण हुआ है उन सभी 9 प्रतिमा की प्राणप्रतिष्ठापणा इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव में संपन्न होनेवाला हैं। नांदणी वृषभाचल पर (निशिदिका में) चक्रेश्वरी देवी (भ. वृषभनाथ जी की शासनदेवी यक्षिणी) और क्षेत्रपालजी की नूतन स्थापना होगी। यह चक्रेश्वरी मंदिर बहोतही सुंदर बन रहा है।

वृषभाचल में 24 टोक पर सम्मेदशिखरजी की प्रतिकृती बनी है। उसीके 24 वे टोक पर पावपुरी क्षेत्र का थोडा विकसितरूप देकर नूतन पावपुरी की रचना होगी। नांदणी की पावन धरा पर 1 जनवरी 2025 की सुबह एक नया इतिहास लेकर उदित होगी। नांदणी की पावन धरा पर 1 जनवरी 2025 की सुबह एक नया इतिहास लेकर उदित होगी। यहां प्रात- से ही इंद्र-इंद्राणियां स्वर्ग के देवताओं की वेशभूषा में सुंदर सज-धजकर नजर आएंगे।

पंचकल्याणक को लेकर हर किसी के मन में सवाल उठते होंगे कि आखिर ये क्या है। इसका धार्मिक महत्व क्या है? तीर्थंकरों के जीवन में घटित पांच घटनाओं का चित्रण पंचकल्याणक में होता है। गर्भ में आने से लेकर मोक्ष तक की यात्रा पंचकल्याणक के माध्यम से देखने को मिलता है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा उत्सव जैनियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण अवसरों में से एक है। तीर्थंकरों की पत्थर और धातु की मूर्तियों को केवल मूर्ति के रूप में लाया जाता है, जब प्रतिष्ठा हो जाती हैं, तब तीर्थंकर भगवान की प्रत्येक मूर्ति पूजनीय बन जाती है। फिर इन मूर्तियों की पूजा इस तरह की जाती है जैसे कि तीर्थंकर भगवान वास्तव में मौजूद हों और प्रतिदिन पवित्र धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं।

जैन धर्म में पंचकल्याणक में वे पाँच मुख्य घटनाएँ हैं, जो सभी तीर्थंकरों के जीवन में घटित होती हैं। ये पाँच कल्याणक हैं- गर्भ कल्याणक- जब तीर्थंकर प्रभु की आत्मा माता के गर्भ में आती है। जन्म कल्याणक- जब तीर्थंकर बालक का जन्म होता है। दीक्षा कल्याणक- जब भगवन सब कुछ त्यागकर वन में जाकर मुनि दीक्षा ग्रहण करते है। केवल ज्ञान कल्याणक- जब प्रभू को केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। मोक्ष कल्याणक- जब भगवान शरीर का त्यागकर अर्थात सभी अष्ट कर्म नष्ट करके मोक्ष को प्राप्त करते है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की परम्परा यह बहुत प्राचीन परम्परा है। यह परम्परा अविरत रूप से चली आ रही है। आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया का महोत्सव है पंचकल्याणक। धर्म संस्कार जनमानस तक पहुंचाने का माध्यम है पंचकल्याणक महोत्सव।नमोस्तु शासन जयवंत हो। **-अभिषेक अशोक पाटील**

संक्षिप्त समाचार

मुनि श्री अभय सागर जी महाराज ससंघ का कुंडलपुर में भव्य मंगल प्रवेश

कुंडलपुर दमोह (विश्व परिवार)। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में युगश्रेष्ठ संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं परम पूज्य आचार्य श्री समय सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनिश्री अभय सागर जी महाराज ससंघ का कुंडलपुर की पावन धरा पर भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर परम पूज्य आर्यिकारत्न श्री मृदुमति माताजी ससंघ के मंगल सानिध्य में कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी द्वारा निर्यापक मुनि संघ की भव्य अगवानी की गई। मुनि संघ का पाद प्रक्षालन किया एवं आरती की गई। इस अवसर पर कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री चंद्रकुमार सराफ सहित कमेटी के पदाधिकारी सदस्य गण, पूर्व कमेटी के पदाधिकारी गण, बड़ी संख्या में दर्शनार्थी यात्री भक्तगण, कुंडलपुर जैन समाज, कुंडलपुर ग्राम वासी, महिला वर्ग, ब्रह्मचारी भैया, दीदी जी, कुंडलपुर स्टाफ की उपस्थिति रही।

चौथे दिन की कथा में वामन अवतार एवं श्रीकृष्ण जन्म का हुआ वर्णन

रायपुर (विश्व परिवार)। स्थानीय समता कॉलोनी रायपुर धाम खाटू श्याम मंदिर में जिंदल एवं सिंघल परिवार की ओर से आयोजित श्रीमद्भागवत कथा अमृत महोत्सव में डीडवाना नागौर राजस्थान से पधारे आचार्य पंडित श्री संजय कृष्ण जी शास्त्री महाराज ने कथा के चौथे दिन भगवान वामन अवतार, रामावतार एवं श्रीकृष्ण जन्म की कथा का वर्णन किया तथा बच्चों ने वामन अवतार एवं श्रीकृष्ण-वासुदेव की मनमोहक झांकियां भी पेश की। श्रीकृष्ण जन्म की कथा का वर्णन करते हुए गुरुजी ने बताया कि भगवान श्री कृष्ण का जन्म कंस की कारागार में भादो मास की अष्टमी तिथि को रोहिणी नक्षत्र में मध्य रात्रि के समय हुआ था। आगे चलकर भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी कंस का वध करके पृथ्वी को अत्याचारों से मुक्त किया तथा अपने माता-पिता को कारागार से छुड़वाया। अतः श्री कृष्ण जी हमारे पूज्य देव हैं। शास्त्री जी ने बताया कि राम कथा हमे जीना सिखाती हैं, और भागवत कथा जीवन को तारना शिकाती हैं। कथा के मुख्य यजमान निर्मल जी सिंगल और नवरंग जी जिंदल ने बताया कि जीवन की भगड़ोडी भरी जिंदगी में हमे भी भव्य कथा के आयोजन का और रस पान का अवसर मिला यह हमारा परम सौभाग्य है और उन्होंने समाज से आग्रह किया कि अधिक से अधिक संख्या में बच्चों सहित सभी कोई आए तो उस परिवार के बच्चों को यानी कि आने वाली पीढ़ी को जीवन जीने की शैली मार्गदर्शन प्राप्त होगा। आगे जानकारी देते हुए बताया गया कि यह श्रीमद् भागवत कथा प्रतिदिन 3:15 से 6:15 तक 25 दिसंबर तक चलेगी।

चेम्बर प्रतिनिधिमंडल ने डॉ. लाल उम्मेद सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से सौजन्य मुलाकात कर बधाई दी

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेंद्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि चेम्बर प्रदेश अध्यक्ष श्री अमर पारवानी के नेतृत्व में चेम्बर के प्रतिनिधि मंडल ने माननीय डॉ. लाल उम्मेद सिंह जी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रायपुर से सौजन्य मुलाकात की तथा उन्हें पुष्पगुच्छ भेंट कर बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर चेम्बर प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, उपाध्यक्ष- कन्हैया गुप्ता, नरेन्द्र हरचंदानी, जय नानवानी, मंत्री-नीलेश मूंधड़ा, शंकर बजाज, राजेन्द्र खटवानी, प्रशांत गुप्ता, जयंत मोहता, युवा चेम्बर उपाध्यक्ष हिमांशु वर्मा, जयराज गुरुनानी सहित विक्रम केवलानी, ठाकुरदास लुल्ला, विजय चैधरी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

सत्य कहना और सत्य सुनना सबसे बड़ी तपस्या है : मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज

विदिशा (विश्व परिवार)। सत्य कहना और सत्य सुनना सबसे बड़ी तपस्या है उपरोक्त उद्गार आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज संघस्थ श्रुत संवेगी मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज ने श्री शांतिनाथ जिनालय स्टेशन जैन मंदिर में प्रात:प्रवचन सभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने कहा कि संतोष से बड़ा सुख दूसरा नहीं, यदि आपको संतोष नहीं है तो आप कितने भी अधिक संसाधनों को जुटा लैना आपको सुख महसूस नहीं होगा उन्होंने कहा कि जो चीजें आपको प्राप्त हुई है उसी में यदि संतुष्ट रहोगे तो तुमसे अधिक संतुष्ट व्यक्ती दूसरा नहीं और यही स्वर्ग कीअनूभूति है। मुनि श्री ने कहा कि सप्त विषयों में लीन रहना मनुष्य का सबसे बड़ा अवगुण है, इंद्रिय सुख के लिये आपने अपनी पूरी पर्याय झोंक दी लोभ करने से चीजें नहीं मिलेंगी, पुरुषार्थ करने से चीजें मिलें गी मन यदि आपका शुद्ध है तो तुम्हारे अंदर ही तीर्थ है, गुरु में आपको गुरू दिखेंगे।प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया मुनिसंघ की प्रात:काल मंगल अगवानी सागर रोड़ से हुई बड़ी संख्या में समाज बंधुओं ने सकल दि. जैन समाज के साथ मंगल अगवानी की मुनिसंघ धर्मनाथ दि. जैन मंदिर के दर्शन कर खरीफाटक रोड़ से श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर स्टेशन पधारे यंहा पर प्रवचन के पश्चात आहार चर्या संपन्न हुई मुनि श्री आदित्य सागर महाराज को पड़गाहन कर आहार कराने का सौभाग्य सौरभ जैन लंदन को प्राप्त हुआ। प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया मुनि संघ के सानिध्य में दिनांक 23 दिसंम्बर सोमवार से 29 दिसंम्बर तक दि. जैन बड़ा मंदिर किला अंदर में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान देवल परिवार द्वारा किया जा रहा है। सामायिक के उपरांत दौपहर में ढाई बजे घटयात्रा निकालीगई जो कि श्री शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर किलाअंदर पहुंची एवं ध्वजारोहण संपन्न हुआ प्रतिदिन प्रात:6 बजे से मांगलिक कार्यक्रम प्रारंभ होंगे एवं 9 बजे मुनिसंघ के प्रवचन एवं सांयकाल 6:30 बजे से आगम सम्मत श्रुत समाधान कार्यक्रम संपन्न होगा। इस अवसर पर श्री सकल दि. जैन समाज समिति के अध्यक्ष शैलेंद्र चौधरी बड्डू, संजय सेठ, जय कुमार जैन, डा. ए.के जैन, महामंत्री प्रदीप जैन एल आई सी संजय भंडारी सनत जैन मणीधर, सुनील मेंमसाव सहित सभी मुनिसेवक संघ एवं अनुराग जैन मुनिराज सेवा समिति किलाअंदर के सभी सदस्य उपस्थित थे। रवि देवल परिवार ने साधर्मी बंधूओं से कार्यक्रम में पधारने तथा धर्मलाभ लेंने की अपील की है। **-अविनाश जैन**

श्री नेमि गिरनार धर्म पदयात्रा के लिए निर्मल ध्यान केंद्र गिरनार पीठाधीश कर्मयोगी क्षुल्लक श्री समर्पण सागर जी महाराज का आशीर्वाद

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। जैन युवा मंच द्वारा दिनांक 20 दिसंबर 2024 को रीगल टेंट हाउस, सीबीडी ग्राउंड, दिल्ली में निर्मल ध्यान केंद्र, गिरनार जी पीठाधीश क्षुल्लक श्री 105 समर्पण सागर जी महाराज के सानिध्य में आयोजित विशाल आराधना कार्यक्रम में जैन युवा मंच ने किया विश्व जैन संगठन के पदाधिकारियों का सम्मान और क्षुल्लक जी ने दिया श्री नेमि गिरनार धर्म पद यात्रा के लिए मंगल आशीर्वाद और मार्गदर्शन।

विश्व जैन संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय जैन ने विशाल आराधना कार्यक्रम में दिल्ली ह्रष्टक्र से उपस्थित श्रद्धालुओं को अगामी 23 मार्च 2025 को दिल्ली से आरंभ होकर 22वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान मोक्षस्थल गिरनार जी पर 2 जुलाई 2025 को निर्वाण दिवस पर पहुंचने वाली श्री नेमि गिरनार धर्म पद यात्रा की जानकारी देते हुए पद यात्रा में अपने परिवार और मित्रों सहित सम्मिलित होकर तीर्थ वंदना के पुण्यार्जन करने का आह्वान करते हुए क्षुल्लक जी के सानिध्य में मोक्षकल्याणक के अवसर पर पर्वतराज की वंदना दर्शन और निर्वाण लाडू समर्पण के लिए निवेदन किया।

संगठन के संरक्षक गोल्डी जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यश जैन और सम्मानित सदस्य निपुण जैन ने बताया कि क्षुल्लक श्री समर्पण सागर जी महाराज ने पद यात्रा के लिए आशीर्वाद और मार्गदर्शन देते हुए कहा कि यथासंभव पद यात्रा में शामिल होने के प्रयास के साथ 2 जुलाई को गिरनार जी पहुंचने वाली यात्रा में सहयोग करेंगे।

विशाल आराधना में संगठन संरक्षक श्री गोल्डी जैन, अध्यक्ष संजय जैन, उपाध्यक्ष यश जैन, मंत्री राजीव जैन, कोषाध्यक्ष मयंक जैन, महिला प्रकोष्ठ संयोजिका श्रीमती रुचि जैन, मीडिया प्रभारी आकाश जैन, सम्मानित सदस्य निपुण जैन और अन्य सदस्यों ने सहभागिता की और जैन युवा मंच के पदाधिकारियों द्वारा किए गए आयोजन और सम्मान के लिए आभार प्रकट किया। **-आकाश जैन**

विश्व ध्यान दिवस : मनुष्य की बेलगाम इच्छाएं तनाव पैदा कर रही हैं : ब्रह्माकुमारी चन्द्रकला दीदी

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विधानसभा रोड स्थित शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में राजयोग ध्यान समारोह का आयोजित किया गया। विषय था- आन्तरिक शान्ति और विश्व सद्भावना।

समारोह में बोलते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी चन्द्रकला दीदी ने कहा कि वर्तमान भौतिक युग में लोगों की आकाक्षाएं बढ़ती जा रही है। इन बेलगाम इच्छाओं के कारण जीवन में तनाव बढ़ रहा है और तनाव के कारण लोग अनेकानेक बिमारियों के शिकार होते जा रहे हैं। जीवन में तनाव को दूर करने का सबसे अच्छा साधन मेडिटेशन यानि ध्यान करना है। उन्होंने राजयोग मेडिटेशन का उल्लेख करते हुए बतलाया कि इससे मन शान्त होता है और एकाग्रता बढ़ती है। ध्यान से हमें शारीरिक और मानसिक लाभ तो होता ही है। परस्पर एकता और सद्भावना भी जागृत होती है। राजयोग से हमें आत्म निरीक्षण का अवसर मिलता है।

हार्टफुलनेस मेडिटेशन के जोनल कोआर्डिनेटर एवं प्रशिक्षक देवनारायण शर्मा ने कहा कि विश्व में उथल-पुथल मची हुई है। कई देश अहंकार और दुर्भावना के कारण आपस में लड़ रहे हैं। ऐसे माहौल में आन्तरिक शान्ति और वैश्विक सद्भावना की बहुत अधिक जरूरत है जो कि एकमात्र ध्यान साधना के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने अलग-अलग ध्यान पद्धति के साधकों को एक मंच पर लाने के ब्रह्माकुमारीज के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ध्यान करने से जीवन में परिवर्तन आता है। एक व्यक्ति के ध्यान करने से पूरे घर के वातावरण में शुद्धता आ जाती है।

योग आयोग के मुख्य प्रशिक्षक प्रो. छबि राम साहू ने महर्षि पातजंलि द्वारा सिखए गए अष्टांग योग की चर्चा करते हुए कहा कि ध्यान का अभ्यास देवत्व को जागृत करने का प्रयास है। आन्तरिक शान्ति से ही विश्व में सद्भावना आ सकती है। उन्होंने यम नियम प्राणायाम प्रत्याहार धारणा और ध्यान की चर्चा करते हुए बतलाया कि ध्यान साधना हमारे विचारों पर नियंत्रण करने की कला है।

ब्रह्माकुमारी रूचिका दीदी ने कहा कि राजयोग ध्यान पद्धति परम सत्य को जानने और उनसे सम्बन्ध जोडने का माध्यम है। यह हमें जाति धर्म और भाषा आदि के भेदभाव से परे ले जाकर हमारे निज स्वरूप आत्मा और परमात्मा का यथार्थ परिचय कराता है। उन्होंने सभा में राजयोग का व्यवहारिक अभ्यास कराएंगी। कार्यक्रम का सुचारू रूप से संचालन ब्रह्माकुमारी दीक्षा दीदी ने किया।

रविवारीय धार्मिक प्रशिक्षण शिविर में सैकड़ों बच्चों ने मनाया स्नात्र महोत्सव

5 माह के कृशिव सुराना और 18 माह के अर्थव जैन सहित सैकड़ों बच्चों ने भाग लिया

30 दिसम्बर को सोमवती अमावस्या पर दादागुरुदेव की बड़ी पूजा

रायपुर (विश्व परिवार)। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वर जी की पावन प्रेरणा से श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर में सौ से ज्यादा बच्चों ने परमात्मा का स्नात्र महोत्सव मनाया। 5 माह के कृशिव सुराना व 18 माह के अर्थव जैन सहित सैकड़ों बच्चों ने श्री सीमंधर स्वामी के जन्मकल्याणक स्नात्र महोत्सव में भाग लिया। प्रात: से ही स्नात्र महोत्सव को लेकर माता पिता में अपूर्व उत्साह दिखा। कृशिव सुराना व अर्थव जैन की मम्मी स्वेजल सुराना व श्वेता जैन ने कहा कि बच्चों में बाल्यावस्था से ही सुसंस्कारों का बीजारोपण किया जाना जरूरी है। श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर व दादाबाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष संतोष बैद व महासचिव महेन्द्र कोचर ने बताया कि इस बच्चों को धर्म के मार्ग पर मोड़ना जरूरी है इसी उद्देश्य से गुरुदेव की प्रेरणा से प्रति रविवार बच्चों को स्नात्र पूजा, चंदन पूजा व पूजा विधि के सुत्रों का अध्ययन कराया जाता है। इस रविवार को बच्चों ने परमात्मा का स्नात्र महोत्सव मनाया। मेरु शिखर नवरावे हो सुरपति मेरु शिखर नवरावे, घड़ा 108 भरिने प्रभु जी ने नवहन करावे ओ सुरपति के पवित्र आत्म कल्याणकारी श्लोकों के साथ जब एक साथ सभी बच्चों ने श्री सीमंधर स्वामी जिन मंदिर में प्रभु प्रतिमा के सामने सामूहिक स्वर में पाठ किया तो मंदिर में अलौकिक दृश्य उपस्थित हो गया। ट्रस्टी नीलेश गोलछा ने बताया कि आज 108 बच्चों को तीर्थंकर परमात्मा के जन्मकल्याणक की, तीर्थंकरों के जन्म से तीन ज्ञान व व अतिशय बलों की जानकारी देकर मेरुशिखर पर स्नात्र महोत्सव कराया गया। जिनप्रतिमा के 9 अंगों के पूजन की विधि की जानकारी देकर नवांगी पूजा कराई गई, जैन धर्म में ही भगवान की प्रतिमा में भक्तों द्वारा सीधे पूजन का विधान है। बच्चों को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार के लाभार्थी वर्तिका वर्द्धमान वैभव चोपड़ा हैं। ट्रस्टी डॉ योगेश बंगानी ने आगे बताया कि चारों दादागुरुदेव के सम्मुख विधिपूर्वक गुरुवंदन की प्रक्रिया सिखाई गई।

भारत विकास परिषद् विवेकानन्द शाखा ने जरूरतमंदों को कम्बल वितरित किए

सेवा प्रकल्प के अंतर्गत कम्बल के साथ गर्म टोपे व मोजे भी दिए गए

युवाओं के ग्रुप ने रात्रि में 9 बजे के बाद रेल्वे स्टेशन और मेडिकल कॉलेज पहुंचकर सर्दी से बचाने जरूरतमंद लोगों को कम्बल बांटें

झांसी (विश्व परिवार)। नगर की प्रमुख समाजसेवी संस्था भारत विकास परिषद् विवेकानन्द शाखा के तत्वावधान एवं अध्यक्ष सौरभ जैन सर्वज्ञ के नेतृत्व में सेवा प्रकल्प के अंतर्गत सर्दी से बचाव के लिए रात्रि 9 बजे के बाद युवाओं ने स्टेशन और मेडिकल कॉलेज पहुंचकर जरूरतमंद लोगों को कम्बल, टोपे-मोजे आदि वितरित किए। इस अवसर पर संस्थापक अध्यक्ष गौरव जैन जैनम्, संरक्षक वरुण जैन, प्रांतीय पदाधिकारी निशांत शुक्ला, उपाध्यक्ष एंजी. विकल्प जैन, कोषाध्यक्ष सजल जैन चैनू, कार्यक्रम संयोजक पूर्व सचिव अर्पित सेठ, पूर्व अध्यक्ष परंतप शर्मा, सचिन सर्राफ, गौरव जैन नीम, आदित्य शर्मा, अमन जैन विरागप्रिय, दीपांक सिंघई, अनमोल नगरिया, गौरव चौधरी, हर्षित बुधौलिया, नितिन अग्रवाल हैप्पी, पारस जैन, सजल अग्रवाल दादा, संदीप सोनी जीतू, विक्की अग्रवाल, अंशुल जैन, विनय नरवानी, हेमन्त राय, विपुल झां, सीए उज्जवल मोदी आदि उपस्थित रहें। **-सौरभ जैन सर्वज्ञ**

संक्षिप्त समाचार

मेटाडोर पलटी,चार की मौत 20 से अधिक घायल

बस्तर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के दरभा में एक भीषण सड़क हादसा हुआ है। इस हादसे में चार ग्रामीणों की मौके पर मौत हो गई है। वहीं कई घायल बताये जा रहे है। मिली जानकारी के अनुसार, बस्तर जिले के दरभा थाना क्षेत्र के चांदामेटा गांव के पास एक मेटाडोर अनियंत्रित होकर पलट गई। यह हादसा इतना भयानक था कि कि वाहन पलटने से वाहन में सवार लोग छिटक कर दूर जा गिरे। और इस हादसे में तीन महिलाओं और एक पुरुष को गंभीर चोट आई और उनकी मौके पर ही मौत हो गई वहीं लगभग दो दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। हादसे के बाद आसपास के लोगों ने तत्काल 108 पर सूचना देकर एंबुलेंस बुलाया और सभी घायलों को इलाज के लिए डिमरापाल मेडिकल कॉलेज पहुंचाया जहां सभी का इलाज चल रहा है। बताया जाता है सभी ग्रामीण वाहन में सवार होकर बाजार गये थे जहां से वे वापस लौट रहे थे।

आरक्षक ने फांसी लगाकर दी जान

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। जिले से एक दिल दहलाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक आरक्षक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। बताया जा रहा है कि आरक्षक का शव पेड़ में फांसी के फंदे से लटका मिला। घटना के बाद पूरे इलाके में सनसनी फैल गई है। जानकारी के अनुसार, घटना खैरागढ़ का है। जहां आरक्षक ने फांसी लगाकर मौत को गले लगा लिया। बताया जा रहा है कि आरक्षक खैरागढ़ जालबांधा में पदस्थ था। आपको बता दें कि यहां आरक्षक भर्ती मामले में 14 संदेही की जांच हो रही थी। इस जांच में आरक्षक भी शामिल था। हालांकि आरक्षक किसी वजह से मौत को गले लगाया है इस बात की जानकारी समाने नहीं आई है। फिलहाल पुलिस आरक्षक के शव को पीएम के लिए भेज कर मामले की जांच कर रही है। इधर इस घटना के बाद पूरे पुलिस विभाग में हड़कंप मचा हुआ है।

महिला पर जानलेवा हमला, गिरफ्तार

कांकेर(विश्व परिवार)। मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि दिनांक 19.12.24 को प्रार्थी लिखित आवेदन पेश कर रिपोर्ट दर्ज कराया कि भाई हंसाराम मण्डावी बताया कि आपके बड़ी मॉं को तुलसीराम मण्डावी ने कोसुम के डण्डा से सिर में मारा है जिसे उसके सिर में एवं शरीर में चोट लगा है जिसको चारामा अस्पताल में ईलाज के लिये भर्ती किये है। चारामा अस्पताल जाकर देखा तो मेरी बडी माँ सिर में गंभीर चोट लगा है खुन निकल रहा है बडी माँ पूछने पर बतायी कि दोपहर 01.30 बजे अपने घर मे चांवल साफकर रही थी उसी समय देवर तुलसी राम मण्डावी आकर पारिवारिक पुरानी बातों को लेकर रोज रोज लड़ाई झगडा करती हो आज मै तुझे नही छोड़ुगा जान से मार दुंगा बोलकर अपने साथ मे लाये कोसुम के डण्डा से प्राण घातक हमला कर गंदी गंदी गाली गलौच कर जोर जोर से मारपीट किया है जिससे गंभीर चोट लगा है कि रिपोर्ट पर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया । वरिष्ट पुलिस अधीक्षक कांकेर आई. के. ऐलिसेला (भा.पु.से.)के निर्देशन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिनेष कुमार सिन्हा (रा.पु.से.)के मार्गदर्शन में में थाना प्रभारी निरीक्षक दिलेश्वर चन्द्रवंषी के नेतृत्व मेंआरोपी पता तलाष कर आरोपी तुलसी राम मण्डावी पिता सुदधुराम मण्डावी निवासी खैरवाही को हिरासत में लेकर पूछताछ पर अपराध घटित करना स्वीकार करने पर विधिवत गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया।

तलवार लहराते युवक को पुलिस ने किया गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। शहर के नयापारा वार्ड शीतला मंदिर के पास तलवार लहराते हुए लोगों को डरा धमका रहे एक युवक को कोतवाली पुलिस ने गिरफ्तार कर उसके पास से तलवार जब्त किया है। मामले में आरोपी के विरूद्ध धारा 25,27 आर्म्स एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध किया है। राजबीर सिंग मेहरा उर्फ गिन्नी को भेजा गया जेल मिली जानकारी के अनुसार थाना सिटी कोतवाली पुलिस पेट्रोलिंग पर रवाना हुआ थी इस दौरान इतवारी बाजार के पास मुखबिर से सुचना मिली कि एक युवक अपने हाथ में एक धारदार हथियार को लहराते हुये आने जाने वाले लोगों को डरा धमका रहा है। सुचना पर तत्काल कोतवाली पुलिस टीम मुखबिर के बताये नयापारा वार्ड,शीतला मंदिर के पास पहुंचकर देखा तो एक युवक धारदार तलवार को अपने हाथ लेकर आम जगह पर लहरा रहा था जिसे देखकर आने जाने वाले लोगो में भय व्याप्त था। जिसे पुलिस ने पकड़ लिया। नाम पता पुछने पर युवक ने अपना नाम राजबीर सिंग मेहरा उर्फ गिन्नी पिता सुखबीर सिंग उम्र 19 साल साकिन रिसाई पारा जमात खाना के पास धमतरी का रहने वाला बताया। जिसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर उसके खिलाफ धारा 25,27 आर्म्स एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

बस्तर जिले में 99 हजार मेट्रिक टन से ज्यादा हुई धान की खरीदी

दस हजार मेट्रिक टन से अधिक धान का हुआ उठाव

जगदलपुर(विश्व परिवार)। जिले में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के तहत अब तक 99 हजार मेट्रिक टन से अधिक धान की खरीदी की गई है। वहीं उपार्जित धान का उठाव सुनिश्चित किया जा रहा है। वर्तमान में जिले के धान खरीदी केन्द्रों से 10 हजार मेट्रिक टन से ज्यादा धान का उठाव किया जा चुका है। ज्ञात हो कि खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के तहत मोटा धान 2300 रुपए प्रति क्विंटल और पतला धान 2320 प्रति क्विंटल की दर से खरीदी किया जा रहा है। इस वर्ष समूचे प्रदेश के सभी जिलों में 14 नवम्बर से धान खरीदी प्रारंभ हुई है। जिले में कुल 79 उपार्जन केंद्रों में पंजीकृत 52383 कृषकों से धान खरीदी किया जाना है। इस वर्ष लघु एवं सीमांत कृषकों को दो टोकन और बड़े कृषकों को तीन टोकन का प्रावधान है। टोकन ऑफ्लाइन एवं ऑनलाइन दोनों माध्यम से किसानों को प्रदान किया जा रहा है। सभी उपार्जन केंद्रों में इलेक्ट्रॉनिक कांटा, मॉस्चर मीटर, बॉयोमेट्रिक डिवाइस उपलब्ध है। सभी धान खरीदी केंद्रों में नये और पुराने बारदानों की पूरी व्यवस्था की गई है। जिला विपणन अधिकारी जगदलपुर ने बताया कि जिले के सभी धान खरीदी केन्द्रों का नोडल अधिकारियों द्वारा नियमित तौर पर निरीक्षण कर आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित किया जा रहा है। साथ ही अन्य अधिकारियों द्वारा धान खरीदी की मॉनिटरिंग की जा रही है। उन्होंने बताया कि इन सभी धान खरीदी केन्द्रों पर किसानों को धान उपार्जन हेतु पर्याप्त बारदाने की उपलब्धता सहित तौल की व्यवस्था मुहैया कराई जा रही है। वहीं अभी बारिश की संभावना के मद्देनजर उपार्जित धान को कैप कव्हर कर सुरक्षित रखे जाने के निर्देश सभी धान खरीदी केन्द्र प्रभारियों को दिए गए हैं। जिले में कुल 52383 पंजीकृत किसानों में से अब तक 17656 किसानों से धान खरीदी की गई है। जिले के 79 उपार्जन केन्द्रों में 99718 मेट्रिक टन धान का उपार्जन कार्य किया जा चुका है। वहीं अभी तक उपार्जन केन्द्रों से 23756 मेट्रिक टन धान का परिवहन आदेश एवं डीओ जारी किया जा चुका है। जिसके विरूद्ध मिलर्स एवं परिवहनकर्ताओं द्वारा कुल 10762 मेट्रिक टन धान का उठाव किया जा चुका है। जिले में कुल 29 मिलर्स द्वारा एग्रीमेंट किया गया है। मिलर्स द्वारा डीओ जारी कर धान का उठाव किया जा रहा है। साथ ही अन्य केन्द्रों से भी परिवहनकर्ताओं द्वारा निरंतर धान का उठाव कर धान संग्रहण केन्द्र नियानार एवं छोटेदेवड़ा में भण्डारण किया जा रहा है।

शराब का अवैध परिवहन कर रहे दो आरोपी गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले की थाना सिटी कोतवाली पुलिस ने अवैध रुप से शराब ले जा रहे दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से कुल 50 पौवा देशी मशाला/प्लेन,शराब कीमत 5180 रूपये एवं एक वाहन जप्त किया है। मामले में आरोपियों के विरूद्ध धारा 34 (2) आबकारी एक्ट के तहत वैधानिक कार्यवाही की गई है। मिली जानकारी के अनुसार धमतरी पुलिस थाना सिटी कोतवाली धमतरी को मुखबिर के सूचना मिली की नहर नाका शराब भट्ठी के पास हरफत्तराई रोड धमतरी के पास दो व्यक्ति अपने काले रंग के डीलक्स मोटर साइकिल में अवैध रूप से थैले में शराब रखकर ले जा रहे हैं। सूचना के आधार पर शराब रेड कार्यवाही कर आरोपी ईमन सतनामी एवं प्रमोद कुमार बेर को पकड़कर उनके कब्जे से प्लास्टिक झोला के अंदर 33 पौवा देशी मशाला एवं 17 पौवा प्लेन शराब कीमती 5180 रूपये तथा शराब तस्करी में प्रयुक्त मोटरसायकल को जप्त कर आरोपी के विरूद्ध थाना सिटी कोतवाली में धारा 34(2)आबकारी एक्ट के तहत वैधानिक कार्यवाही कर दोनों आरोपियों को न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

कभी नक्सल प्रभावित रहे दरभा ब्लॉक के काफी उत्पादन ने बदली विकासखंड की फिजा

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कभी नक्सल प्रभावित क्षेत्र रहे बस्तर जिला का विकासखंड दरभा अब बदल रहा है। अब यहां कॉफी बोर्ड ऑफइंडिया के सहयोग से हॉर्टिकल्चर कॉलेज कॉफी का उत्पादन करवा रहा है। जिससे यहां के लोगों को रोजगार भी मिल रहा है। साथ ही उनकी आय में बढ़ोतरी भी करा रहा है। इस बारे में बागवानी वैज्ञानिकों का कहना है कि 2017-18 में प्रयोग के रूप में यहां कॉफी अरेबिका की चार किस्मों के साथ कॉफी रोबस्टा की एक किस्म को 20 एकड़ में लगाया गया था। मनरेगा के कन्वर्जन से महिलाओं को प्लांटेशन के इस जगह से रोजगार के अवसर मिला। यह प्रयोग सफ्ल हुआ, 2020 में इसकी कटाई के बाद इससे बने ब्रांड को बस्तर कॉफी नाम दिया गया। इस प्रयोग के सफ्ल होने पर जिला प्रशासन द्वारा ब्लॉक के उरुगपाल-कांदानार, मुंडागढ़ और बास्तानार ब्लॉक में भी कॉफी का प्लांटेशन करवाया गया। उद्यानिकी कालेज के वैज्ञानिक ने बताया कि जिला प्रशासन ने वन अधिकार मान्यता पत्र धारकों को लंबे समय तक आय का जरिया देने के लिए धान की खेती के अतिरिक्त अन्य फ्सल को अपनाने के लिए प्रेरित करने के दौरान दरभा विकासखंड के मौसम और वातावरण को ध्यान रखते हुए कॉफी की खेती को बढ़ावा दिया जाने हेतु पहल किया गया। उन्होंने बताया कि उद्यानिकी विभाग के पास विगत 30 वर्षों का क्लाइमेट की डाटा और टोपोग्राफी के आधार पर प्लांटेशन क्रॉप का कार्य योजना बनाई थी। कॉफी खेती के लिए तीन प्रमुख चीजों का ध्यान रखा जाता है जिसमें समुद्र तल से 650 मीटर से अधिक की ऊंचाई, मार्च अप्रैल में 20 एमएम बारिश और छाया की आवश्यकता होती है। दरभा क्षेत्र में समुद्र तल से आवश्यक ऊंचाई और मार्च अप्रैल में बारिश की आवश्यकता पूरी होने तथा छाया के लिए प्लांटेशन क्षेत्र में सिल्वरओक,आम, कटहल, मुनगा, चंद्रिका का पौधारोपण किया गया। इसके अलावा पहले मौजूद महुआ के पेड़ों को रख गया। प्लांटेशन से इस क्षेत्र को नई पहचान मिली है कॉफी का उत्पादन भी होने लगा है। जिसमें महिलाएं नवम्बर, दिसंबर में फ्सल की तुड़ाई कर कॉफी बनाने की प्रारंभिक चरण को पूरा कर आगे की प्रोसेसिंग हेतु उद्यानिकी कालेज जगदलपुर भेजते है। जहां पर प्रोसेसिंग, रोस्टिंग, ग्राइंडिंग कर पैकेजिंग किया जाता है। शनिवार को कलेक्टर हरिस एस ने दरभा ब्लॉक के तीन प्लांटेशन केंद्र का निरीक्षण किया।

बीसीएस पीजी कॉलेज में हुआ साइकिल रैली एवं संगोष्ठी का आयोजन

धमतरी(विश्व परिवार)। सुशासन के एक साल, छत्तीसगढ़ हुआ खुशहाल कार्यक्रम के तहत जिले में अनेक कार्यक्रम एवं गतिविधियां आयोजित कर प्रदेश सरकार के एक साल की उपलब्धियों की जानकारी लोगों को दी जा रही है। साथ ही विभिन्न योजनाओं के तहत लाभान्वित हितग्राहियों का सम्मान भी किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज स्थानीय बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी में राष्ट्रीय सेवा योजना व राष्ट्रीय कैडेट कोर के संयुक्त तत्वाधान में संगोष्ठी एवं साइकिल रैली का आयोजन हुआ। कॉलेज के प्राचार्य डॉ विनोद कुमार पाठक ने बताया कि यह कार्यक्रम 09 दिसंबर से प्रारंभ होकर 20 दिसंबर 2024 तक आयोजित किया जा रहा है। संगोष्ठी में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं पर चर्चा किया। राजनीति शास्त्र विभाग से प्रो. निशा तिवारी ने कहा कि महतारी वंदन योजना से राज्य की माताओं को अपना घर चलाने में सहयोग मिल रहा है। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी प्रो आकांक्षा मरकाम ने बताया कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के शासन में धमतरी जिले को अनेक प्रकार की उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं। जल जीवन मिशन, फसल चक्र परिवर्तन जैसे अनेक क्षेत्रों में जिले के लोगों को राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं। एनसीसी केयर टेकर दिनेश्वर सलाम ने शासन की प्रत्येक जनकल्याणकारी योजनाओं का विस्तार से वर्णन किया। संगोष्ठी कार्यक्रम का संचालन रेडक्रॉस प्रभारी प्रो कृष्ण कुमार देवांगन ने किया। इसके उपरांत महाविद्यालय से अंबेडकर चौक तक साइकिल रैली निकाली गई। इस दौरान एनएसएस स्वयंसेवक संकेत कुमार साहू, विभा पांडे, मोनिका, संदीप, परमानंद, अभिलाषा, वीणा, कुलदीप, एनसीसी कैडेट फिरोज, वारुणी, इंद्रेश, डिगेश्वरी एवं अन्य छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

पत्नी की प्रताड़ना से तंग आकर लगाई फांसी

बालोद(विश्व परिवार)। जिले के अर्जुन्दा थाना क्षेत्र में एक पति ने अपनी पत्नी की प्रताड़ना से तंग आके फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। बताया जा रहा है कि पत्नी के ईसाई धर्म अपनाने और बार-बार विवाद कर मायके जाने से पति आहत था. आत्महत्या से पहले पति ने घर की दिवार पर सुसाइड नोट भी लिखा है. मामले में पुलिस ने जांच शुरू कर दी है.मिली जानकारी के मुताबिक, अर्जुंदा नगर वार्ड क्रमांक 11 के रहने वाले (35 वर्षीय) गजेंद्र देवांगन की पत्नी राजेश्वरी देवांगन ने इसाई धर्म को अपना लिया था. इस बात से पति आहत था. पति और पत्नी के बीच आए दिन विवाद होता था. पत्नी बच्चों को छोड़कर बार-बार मायके चली जाती थी. इस बात की जानकारी पति गजेंद्र ने पुलिस थाने में भी 8 दिसंबर को दी थी. लगातार प्रताड़ना से परेशान होकर पति गजेंद्र देवांगन ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली. आत्महत्या से पहले गजेंद्र ने दिवार पर सुसाइड नोट भी लिखा है. जिसमें पत्नी, सास, ससुर और साले पर गंभीर आरोप लगाया है. साथ ही एक व्यक्ति का नाम लिखकर 50 हजार वापस नहीं करने का भी आरोप लगाया है. मामले में अर्जुन्दा पुलिस जांच में जुट गई है. शव को पीएम के लिए भेज दिया गया है. पीएम रिपोर्ट आने में बाद कई लोगों की गिरफ्तारी हो सकती है।

पूर्व विधायक ने व्यावसायिक एवं सार्वजनिक वाहनों के मूल टैक्स पर लगी पेनल्टी पर छूट की मांग की सरकार से

जगदलपुर(विश्व परिवार)। सार्वजनिक एवं व्यावसायिक वाहनों के टैक्स जमा न करने पर लगाई गई पैनाल्टी से वाहन स्वामियों को राहत देने के लिए जगदलपुर विधानसभा के पूर्व विधायक संतोष बाफ्ना ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को पत्र लिखकर एकमुश्त समाधान हेतु पैनाल्टी में शत-प्रतिशत छूट देने की मांग की है। गौरतलब है कि पिछले दिनों क्षेत्र के परिवहन संचालकों ने बाफ्ना से मिलकर अपनी समस्या से उन्हें अवगत कराया था। जिसपर बाफ्ना ने प्रदेश की भाजपा सरकार के समक्ष उनकी मांग उठाने का आश्वासन भी दिया था। इसी तारतम्य में उन्होंने सीएम को पत्राचार किया। कोरोना संक्रमण के बढ़ते प्रभाव के दौरान महामारी के पहले और दूसरे फेज की रोकथाम एवं प्रसार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से जब पूरे देश सहित राज्य में वाहनों के परिचालन पर रोक लगा दी गई थी। उस दौरान न केवल वाहन सड़कों से बाहर थे बल्कि गैराजों में ऐसे ही खड़े रहे, क्योंकि उनके परिचालन की अनुमति नहीं थी जिससे परिवहन व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यापार भी खासा प्रभावित हुआ था। पूर्व विधायक ने मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा है कि, कोरोनाकाल के पश्चात् जब स्थिति सामान्य हुई तो बाजार में मंदी का दौर भी था जिसकी वजह से वाहन स्वामी व संचालक कोरोनाकाल की अवधि दो वर्षों का मोटर व्हीकल टैक्स, रोड टैक्स,परमिट टैक्स व परिवहन पर लगने वाले अन्य टैक्स की अदायगी नहीं कर पाए। उन पर अब टैक्स के साथ ही लाखों रूपये की पैनाल्टी भी लग चुकी है। इस प्रकार वाहन के मूल टैक्स की राशि के साथ लाखों रूपये की पैनाल्टी भी अब तक बकाया है। बाफ्ना ने वाहनों के बकाये टैक्स पर लगी पैनाल्टी (विलंब संदाय) के बोझ से जूझ रहे वाहन स्वामियों व संचालकों को सरकार की ओर से राहत देने की अपील की है।कोरोनाकाल के दरम्यान दो वर्षों का वाहनों पर लगने वाले टैक्स की पैनाल्टी को शत-प्रतिशत माफ करने की मांग की है और कहा है कि सरकार के इस कदम से न केवल वाहन स्वामियों द्वारा बकाये टैक्स की पूरी रकम एकमुश्त अदायगी में तेजी आयेगी, बल्कि इससे राज्य शासन को बड़े स्तर पर राजस्व की भी प्राप्ति होगी।

24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में इदं नमम् स्वाहा की गूंज, यज्ञ धूम्र से महका पूरा वातावरण

वैदिक मन्त्रोंच्चार के बीच वेदमाता गायत्री, सावित्री व कुंडलिनी शक्ति पुनः प्रतिष्ठित

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। नव साज- सज्जा व नए कलेवर से युक्त गायत्री शक्तिपीठ में आज वैदिक मन्त्रोंच्चार के बीच हर्षोल्लास के साथ वेद माता गायत्री ,मां सावित्री व कुंडलिनी शक्ति की पुनर्प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस दौरान 24 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे बड़ी संख्या में गायत्री परिजनों व सत्य सनातन धर्मी जनों ने इदं नमम् स्वाहा ध्वनि के साथ यज्ञाहूति प्रदान की । इस दौरान पूरा माहौल वैदिक मन्त्रों की गूंज से गुंजायमान हो उठा वहीं महायज्ञ की धूम्र से पूरा वातावरण महक उठा। बता दें कि अ0भा0गायत्री परिवार के संस्थापक पूज्य गुरुदेव श्री राम शर्मा आचार्य द्वारा आज से 60 वर्ष पूर्व 21 दिसंबर को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में स्वयं अपने हाथों से वेदमाता गायत्री, सावित्रि व कुंडलिनी शक्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी। उक्त मंदिर के पुनर्निर्माण होने उपरांत शक्तिपीठ द्वारा 4 दिवसीय भव्य आयोजन कर वेदमाता गायत्री प्रतिमाओं की पुनः प्राण प्रतिष्ठा की गई। मां गायत्री पुनर्प्राण प्रतिष्ठा अवसर पर महापौर दम्पत्ति श्री हेमा सुदेश देशमुख, सूर्यकांत चितलांग्या, बृजकिशोर सुरजन,भोला डागा, जयंती भाई पटेल,तरुणदीप अरोरा,श्री किसन खंडेलवाल, नरेंद्र लोहिया, विजय हरिहरणों, नंदकिशोर खंडेलवाल सालिगराम, मुरलीधर चौधरी, डा0 दुलेश्वर, अशोक खंडेलवाल, वर्षा अग्रवाल ,विजय कौशिक, हिरेन ठक्कर, हरिश गांधी, भाई ओमप्रकाश ,जय प्रकाश देवशरण आदि सहित बड़ी संख्या में गायत्री परिजनों व सत्य सनातन धर्मियों की उपस्थिति बनी रही।

अवैध रुप से बने चर्चो को तोड़ने वाले बयान पर भड़का ईसाई समाज

जगदलपुर(विश्व परिवार)। बस्तर में अवैध रूप से निर्मित चर्चों को तोड़े जाने वाले बयान पर ईसाई समाज ने कड़ी आपत्ति जताई है. जनजातीय मसीह सेवा एवं शैक्षणिक कल्याण समिति से जुड़े पदाधिकारियों ने धर्मांतरण के आरोपों को खारिज करते हुए चर्चों को तोड़े जाने वाले बयान पर आक्रोश जताया. गौरतलब है कि बीते दिनों ही छत्तीसगढ़ सर्व आदिवासी समाज एवं विभिन्न हिन्दू संगठनों द्वारा पत्रवार्ता कर बस्तर में जबरन धर्मांतरण किए जाने का आरोप लगाया था. समाज के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष राजा राम तोड़ेम ने बस्तर में अवैध चर्चों को चिन्हित करने की बात कहते हुए अवैध चर्चों को तोड़ने की बात कही थी. इसी बयान पर अब ईसाई समाज के संगठनों ने आपत्ति दर्ज कराई है. जनजातीय मसीह सेवा एवं शैक्षणिक कल्याण समिति के संभागीय अध्यक्ष सरपत मंडावी ने अवैध धर्मांतरण और चर्चों के निर्माण का आरोप लगाने वालों को प्रमाण प्रस्तुत करने की चुनौती दी है।

व्यापार समाचार

भारत की आपूर्ति श्रृंखला को बढ़ावा देने को 350 मिलियन डॉलर के ऋण के लिए केंद्र सरकार व एडीबी के बीच समझौता

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत सरकार और एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने शुक्रवार को स्ट्रेंथेनिंग मल्टीमॉडल एंड इंटीग्रेटेड लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम (स्माइल) प्रोग्राम के दूसरे उपप्रोग्राम के तहत घरेलू विनिर्माण क्षेत्र को मजबूत करने और आपूर्ति श्रृंखला में सुधार करने को 350 मिलियन डॉलर के ऋण के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अनुसार, स्माइल कार्यक्रम भारत में लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में व्यापक सुधार करने में सरकार का समर्थन करने के लिए एक प्रोग्रामेटिक नीति-आधारित ऋण (पीबीएल) है। इस दृष्टिकोण में दो उपकार्यक्रम शामिल हैं। इनका उद्देश्य भारत के विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार करना और इसकी आपूर्ति श्रृंखलाओं के लचीलेपन में सुधार करना है। मंत्रालय ने एक बयान में कहा, भारत सरकार और एडीबी के बीच सहयोग लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में विकास और नवाचार को बढ़ावा देने, भारत के व्यापक आर्थिक विकास लक्ष्यों का समर्थन करने की साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ऋण समझौते पर हस्ताक्षर करने वालों में वित्त मंत्रालय का आर्थिक मामलों का विभाग (डीईए), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय का उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) और एडीबी शामिल थे। स्माइल कार्यक्रम राष्ट्रीय, राज्य और शहर स्तर पर मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढांचे के विकास के लिए संस्थागत आधारों को मजबूत करने के माध्यम से लॉजिस्टिक्स दक्षता बढ़ाने के लिए एक व्यापक नीति ढांचे का संचालन करता है। यह आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने और बड़े निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने, बाहरी व्यापार लॉजिस्टिक्स में दक्षता में सुधार करने और कुशल और कम-उत्सर्जन लॉजिस्टिक्स के लिए स्मार्ट सिस्टम अपनाने के लिए वेयरहाउसिंग और अन्य लॉजिस्टिक्स संपत्तियों को मानकीकृत करने में भी मदद करता है। मंत्रालय के अनुसार, भारत के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र का विकास इसके विनिर्माण क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। रणनीतिक नीति सुधारों, बुनियादी ढांचे के विकास और डिजिटल एकीकरण के माध्यम से, चल रहे सुधार लॉजिस्टिक्स परिदृश्य को बदलने के लिए तैयार हैं। इस परिवर्तन से लागत कम होने, दक्षता में सुधार, रोजगार के पर्याप्त अवसर पैदा होने और लैंगिक समावेशन को बढ़ावा मिलने-स्थायी आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

क्रिसमस से पहले शेयर बाजार में मंदी

मुंबई(एजेंसी) । वैश्विक स्तर पर बिकवाली के बीच इस हफ्ते भारतीय बेंचमार्क सूचकांकों में 5 प्रतिशत की गिरावट आई, जिसके लिए अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा अगले साल ब्याज दरों में कटौती के लिए सतर्कता बरतना भी एक बड़ा कारण रहा। इसके परिणामस्वरूप विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा लगातार बिकवाली की गई। इस सप्ताह पांच में से तीन कारोबारी सत्रों में सेंसेक्स में 1,000 से अधिक अंकों की गिरावट आई और बीएसई में लिस्टेड फर्मों से लगभग 17 लाख करोड़ रुपये का बाजार पूंजीकरण खत्म हो गया। बाजार के जानकारों के अनुसार, यह इक्विटी बाजारों के लिए एक बेहद खराब सप्ताह रहा, क्योंकि प्रमुख सूचकांकों में तेज गिरावट आई, जिससे पिछले चार हफ्तों की बढ़त खत्म हो गई। एंजेल वन के ओशो कृष्णन ने कहा, बेंचमार्क सूचकांक में इस गिरावट के साथ पिछले सप्ताह के बंद आंकड़े से लगभग 1,200 अंक नीचे आ गया। परिणामस्वरूप, यह सप्ताह 200 सरल मूविंग एवरेज (एसएमए) से नीचे समाप्त हुआ, जो लगभग 5 प्रतिशत की कुल हानि को दर्शाता है। निफ्टी50 में तेज गिरावट देखी गई, सूचकांक ने सभी समर्थन स्तरों को तोड़ दिया। इस नीचे की ओर गति ने सूचकांक को अपने सबसे हालिया स्विंग लो के करीब पहुंचा दिया है, जो बाजार में अस्थिरता का संकेत देता है। कृष्णन ने आगे कहा, तकनीकी दृष्टिकोण से, निफ्टी सूचकांक 200 एसएमए के महत्वपूर्ण क्षेत्र से नीचे फिसल गया, इसलिए अगला संभावित समर्थन हाल ही में 23,200-23,100 के आसपास के स्विंग लो के आसपास देखा जा सकता है। कमजोर वैश्विक संकेतों नीचे गिरे, लेकिन इसके बाद की बिकवाली ने क्रिसमस से पहले बाजार को बियर के साथ लाल रंग में रंग दिया। शुक्रवार को सेंसेक्स 1,176.46 अंक या 1.49 प्रतिशत की गिरावट के साथ 78,041.59 पर बंद हुआ और निफ्टी 364.20 अंक या 1.52 प्रतिशत की गिरावट के साथ 23,587.50 पर बंद हुआ।

केएल राहुल के साथ कौन करेगा ओपनिंग? खतरनाक होने वाली है दिल्ली कैपिटल्स की जोड़ी

नईदिल्ली(एजेंसी)। आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में केएल राहुल को दिल्ली कैपिटल्स ने 14 करोड़ रुपये में खरीदकर अपने साथ जोड़ लिया. हालांकि, अब तक फ्रेंचाइजी ने इस बात की आधिकारिक घोषणा नहीं की है की केएल ही टीम के कप्तान बनेंगे. मगर, ये बात तो तय है की केएल अपकमिंग सीजन में दिल्ली के लिए कप्तानी करते नजर आएंगे. लेकिन, सवाल ये है की केएल के साथ ओपनिंग करने कौन आएगा? आइए आपको केएल के ओपनिंग पार्टनर के बारे में बताते हैं. भारतीय स्टार क्रिकेटर केएल राहुल आईपीएल 2025 में दिल्ली कैपिटल्स की जर्सी में नजर आने वाले हैं. जहां, जाहिर तौर पर एक बार फिर वह पारी की शुरुआत करने मैदान पर उतरेंगे. केएल एक शानदार ओपनर हैं, जो कंसिस्टेंसी के साथ रन बनाने के लिए जाने जाते हैं. लेकिन, लोगों के मन में सवाल है की केएल के साथ पारी की शुरुआत कौन करेगा? यदि आप भी इसका जवाब तलाश रहे हैं, तो आपको बता दें दिल्ली ने आरटीएम कार्ड का इस्तेमाल करते हुए जेक फ्रेसर मैकगर्क को अपने साथ वापस जोड़ा. इस खिलाड़ी का केएल के साथ ओपन करना तय माना जा रहा है, क्योंकि उन्होंने पिछले सीजन भी तूफानी शुरुआत दिलाई थीं. जेक फ्रेजर-मैकगर्क ने पिछले सीजन ही दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा रहते हुए अपना आईपीएल डेब्यू किया. फ्रेंचाइजी ने कुल 9 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 36.67 के औसत और 234.04 की खतरनाक स्ट्राइक रेट से 330 रन बनाए हैं. इस दौरान उन्होंने 4 अर्धशतक भी लगाए हैं. वह अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी के लिए मशहूर हैं, पिछले सीजन उन्होंने 32 चौके और 28 छक्के जड़े थे.

बॉक्सिंग डे टेस्ट में कोहली की भूमिका अंतर पैदा करने वाली हो सकती है : बांगर

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत के पूर्व मुख्य कोच संजय बांगर का मानना है कि मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में होने वाला बॉक्सिंग डे टेस्ट विराट कोहली के लिए इस अवसर पर खुद को साबित करने और खुद को भारत की बल्लेबाजी लाइनअप की धुरी के रूप में फिर से स्थापित करने का एक बेहतरीन मौका है। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 1-1 से बराबर होने के साथ, यह मैच भारत की श्रृंखला जीतने और विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल में पहुंचने की संभावनाओं को मजबूत करने की उम्मीदों के लिए महत्वपूर्ण है। कोहली का मौजूदा श्रृंखला में प्रदर्शन मिला-जुला रहा है। पर्थ में उनके शतक ने भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई, लेकिन अन्य मैचों में उनका प्रदर्शन निराशाजनक रहा है। छह पारियों में 30 की औसत से केवल 126 रन बनाने के साथ, कोहली निरंतरता बनाए रखने में विफल रहे हैं। पर्थ में अपने शतक को छोड़कर, उन्होंने पांच पारियों में केवल 26 रन बनाए हैं। स्टार स्पोर्ट्स से बात करते हुए, बांगर ने कोहली के सामने आने वाली तकनीकी चुनौतियों पर प्रकाश डाला, खासकर ऑफ-स्टंप के बाहर की गेंदों पर। ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों ने इस कमजोरी को प्रभावी ढंग से लक्षित किया है, जिससे कोहली को गलतियां करने पर मजबूर होना पड़ा है। हालांकि, पूर्व भारतीय क्रिकेटर ने जोर देकर कहा कि क्रीज पर धैर्य और शांत दृष्टिकोण कोहली के इन संघर्षों का इलाज हो सकता है। बांगर ने कहा, कभी-कभी आपको बल्लेबाज के रूप में अपनी स्थिति को थोड़ा नियंत्रण में रखने की आवश्यकता होती है। जब आप खेल के लिए थोड़ा आत्मसमर्पण करते हैं, थोड़ा समय बिताते हैं, कुछ समय के लिए बीच में आराम करते हैं, गेंदबाज के आपके पास आने का इंतजार करते हैं, और खुद गेंदबाज की ओर नहीं बढ़ते हैं, तो यह एक बड़े खिलाड़ी की निशानी है। एमसीजी कोहली को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जो अतीत में उनके लिए अच्छा रहा है। इस मैदान पर 52.66 की औसत से 316 रन बनाने वाले कोहली के पास कई यादगार पल हैं, जिसमें 2014 के बॉक्सिंग डे टेस्ट में खेली गई 169 रनों की शानदार पारी भी शामिल है।

अतीत में पोंटिंग के साथ मेरी अच्छी दोस्ती रही है : श्रेयस अय्यर

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर ने कहा कि वह आईपीएल 2025 के लिए पंजाब किंग्स की टीम में एक बार फिर रिकी पोंटिंग के साथ विचार-विमर्श करने के लिए उत्सुक हैं, और याद किया कि कैसे उन्होंने टूर्नामेंट में पहले ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज कप्तान के साथ अच्छी दोस्ती की थी। पोंटिंग और अय्यर तीन सत्रों तक दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच और कप्तान थे, जहां टीम 2020 में एक बार उपविजेता रही थी। लेकिन इस साल की शुरुआत में पोंटिंग को पंजाब का मुख्य कोच नामित किया गया और पिछले महीने जेद्दा में नीलामी में फ्रैंचाइज़ी ने अय्यर को 26.75 करोड़ रुपये में हासिल किया, जिससे उनका फिर से साथ आना लगभग तय हो गया। मैं समझ सकता हूँ कि प्रशंसकों के बीच क्या भावनाएं होंगी। रिकी के आने से, हमने अतीत से एक बेहतरीन दोस्ती साझा की है। हम कई पहलुओं पर अपनी सोच को आगे बढ़ाएंगे और विचार-विमर्श करेंगे। उम्मीद है कि हम पहले मैच से ही अच्छा प्रदर्शन करेंगे। शनिवार को फ्रेंचाइजी के बयान में अय्यर ने कहा, पंजाब किंग्स का हिस्सा बनने के लिए बेहद उत्साहित हूं। मैं पंजाब किंग्स परिवार में शामिल होने का इंतज़ार नहीं कर सकता। चार ट्रॉफी जीतना मेरे लिए एक शानदार साल रहा है। मेरा मुख्य लक्ष्य पंजाब के लिए आईपीएल ट्रॉफी जीतना है। अय्यर आईपीएल 2024 खिताब जीतने वाली कोलकाता नाइट राइडर्स की कप्तानी करने और हाल ही में बेंगलुरु में मुंबई को अपना दूसरा सैयद मुश्ताक अली टी20 ट्रॉफी खिताब दिलाने के बाद पंजाब सेट-अप में शामिल हुए हैं।

पीएफ धोखाधड़ी के आरोपों के बाद पूर्व क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

नईदिल्ली(एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा से जुड़ी एक बड़ी खबर सामने आ रही है. उनके खिलाफ अरेस्ट वॉरंट जारी हुआ है. उथप्पा पर पीएफ फंड घोटाले का आरोप लगाया गया है, जिसके बाद पुलिस उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी, क्योंकि क्षेत्रीय पीएफ आयुक्त सदाक्षरी गोपाल रेड्डी ने इसके निर्देश दिए हैं. वारंट पीएफ क्षेत्रीय आयुक्त शदाक्षरी गोपाल रेड्डी ने जारी किया, जिन्होंने पुलकेशिनगर पुलिस को आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश भी दिया. सेंचुरीज़ लाइफस्टाइल ब्रांड प्राइवेट लिमिटेड नामक एक प्राइवेट कंपनी का मैनेज करने वाले उथप्पा पर कर्मचारियों के वेतन से पीएफ अंशदान काटने और उनके खातों में पैसे ना डालने का आरोप है. रॉबिन उथप्पा पर 23 लाख रुपये के घोटाले का आरोप है. मिली जानकारी के मुताबिक, उन्होंने अपने कर्मचारियों की सैलरी से पीएफ के नाम से पैसे काटे, लेकिन उनके अकाउंट में ट्रांसफर ही नहीं किए. 4 दिसंबर को लिखे पत्र में, आयुक्त रेड्डी ने पुलिस को गिरफ्तारी वारंट को जारी करने का निर्देश दिया. हालांकि, वारंट को पीएफ कार्यालय में वापस कर दिया गया क्योंकि माना जाता है कि उथप्पा ने अपना घर बदल लिया है. अधिकारी अब क्रिकेटर का पता लगाने और कानून का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए आगे की जांच कर रहे हैं. भारतीय क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा काफी टैलेंटेड प्लेयर रहे. उन्होंने भारतीय टीम के लिए 46 वनडे और 13 टी-20 आई मैच खेले, जिसमें क्रमश: 934 और 249 रन बनाए. मौजूदा समय में उथप्पा कॉमेंट्री करते नजर आते हैं.

कैबिनेट ने 2025 सीजन के लिए कोपरा का एमएसपी बढ़ाकर की 12,100 रुपये प्रति क्विंटल

नई दिल्ली(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने बड़ा फैसला लिया है। समिति ने शुक्रवार को 2025 विपणन सत्र के लिए उचित औसत गुणवत्ता वाले मिलिंग कोपरा का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) बढ़ाकर 11,582 रुपये प्रति क्विंटल और बॉल कोपरा का एमएसपी बढ़ाकर 12,100 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया। आधिकारिक बयान के मुताबिक, एमएसपी में बढ़ोतरी सरकार के उस फैसले के अनुसार की गई है, जिसके तहत फसलों के लिए एमएसपी अखिल भारतीय भारित औसत उत्पादन लागत के कम से कम 1.5 गुना के स्तर पर तय किया जाएगा। बयान में कहा गया है, सरकार ने विपणन सत्र 2014 के लिए मिलिंग कोपरा और बॉल कोपरा के एमएसपी को 5,250 रुपये प्रति क्विंटल और 5,500 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़ाकर विपणन सत्र 2025 के लिए 11,582 रुपये प्रति क्विंटल और 12,100 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया है। यह क्रमश: 121 प्रतिशत और 120 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। उच्च एमएसपी से न केवल नारियल उत्पादकों को बेहतर लाभ सुनिश्चित होगा, बल्कि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारियल उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए किसानों को कोपरा उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन भी मिलेगा। बयान में कहा गया है कि मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस) के तहत कोपरा और छिलका रहित नारियल की खरीद के लिए, भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (नेफेड) और राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ (एनसीसीएफ) केंद्रीय नोडल एजेंसियों (सीएनए) के रूप में कार्य करना जारी रखेंगे। केंद्र की खरीद का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसानों को लाभकारी मूल्य मिले और उपभोक्ताओं, विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्गों को सस्ती कीमत पर वितरण हो। केंद्र सरकार खाद्य सुरक्षा और मूल्य स्थिरता के लिए बफर स्टॉक रखती है। इसी तरह, केंद्र सरकार एफसीआई और राज्य एजेंसियों के माध्यम से धान, मोटे अनाज और गेहूं को मूल्य समर्थन देती है।

आरबीआई ने सब्सिडी खर्च बढ़ाए जाने पर जताई चिंता, दी सलाह

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की रिपोर्ट में राज्यों को चेतावनी दी गई है. आरबीआइ की रिपोर्ट के मुताबिक कृषि लोन माफी, मुफ्त बिजली और परिवहन जैसी रियायतें देने से उनके सामाजिक और आर्थिक बुनियादी ढांचे के लिए महत्वपूर्ण संसाधन खत्म हो सकते हैं. हालांकि, राज्य वित्त: बजट 2024-25 का अध्ययन शीर्षक वाली आरबीआई की रिपोर्ट में कहा गया है कि राज्य सरकारों ने लगातार तीन वर्षों (2021-22 से 2023-24) के लिए अपने सकल राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 3 फीसदी के भीतर रखकर राजकोषीय समेकन की दिशा में सराहनीय प्रगति की है. राज्यों ने 2022-23 और 2023-24 में राजस्व घाटे को जीडीपी के 0.2 फीसदी तक सीमित रखा है. रिपोर्ट के अनुसार राजकोषीय घाटे में कमी ने राज्यों को अपने पूंजीगत खर्च को बढ़ाने और खर्च की गुणवत्ता में सुधार करने की गुंजाइश दी है. रिपोर्ट में कहा गया है कि कई राज्यों ने चालू वित्त वर्ष के लिए अपने बजट में कृषि लोन माफी, कृषि और घरों को मुफ्त बिजली, मुफ्त परिवहन, बेरोजगार युवाओं को भत्ते और महिलाओं को नकद सहायता की घोषणा की है. इस तरह के खर्च से उनके पास उपलब्ध संसाधन खत्म हो सकते हैं और महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक बुनियादी ढांचे के निर्माण की उनकी क्षमता में बाधा आ सकती है. आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार सब्सिडी पर खर्च में तेज वृद्धि ने शुरुआती तनाव का क्षेत्र बनाया है, जो कृषि लोन माफी, मुफ्त/सब्सिडी वाली सेवाओं (जैसे कृषि और घरों को बिजली, परिवहन, गैस सिलेंडर) और किसानों, युवाओं और महिलाओं को कैश ट्रांसफर के कारण है.

शब्द सामर्थ्य -272

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. व्यर्थ, अकारण, बेवजह (उर्दू) 4. साथ में, सहित 5. वर्षा, बारिश, बरखा 8. कथा, किस्सा 9. चिढ़चिड़ा, बदमिजाज 11. प्रलय, आफत, हलचल 12. लाख ढकने का कपड़ा 13. पिता, क्लर्क, सम्मानित व्यक्ति 14. वायु, पवन 16. निवास करना, उपस्थित होना, ठहरना 18. जिसे लात खाने की आदत हो गई हो 19. सेवक, दास, चाकर 21. भ्राता 22. मेघ, जलद, नीरद।

ऊपर से नीचे

1. विशेष, विशिष्ट 2. सुगंध, खुशबू 3. आदमी, मनुष्य, मानव 5. अपेक्षाकृत, अपेक्षया 6. कष्ट, दर्द, दिक्कत 7. पठन, पढ़ने का काम, शिक्षा 10. किस्मत, नसीब, भाग्यवान 12. एक पक्षी जो पुराने समय में संदेश वाहक का काम करता था 13. बाल, बच्चा, लड़का, छोकरा 17. वायु संबंधी, हवा में रहने, उड़ने या होने वाला, बिलकुल काल्पनिक और निर्मूल 19. नाव, कश्ती 20. वर्ष, बरस, एक इमारती वृक्ष।

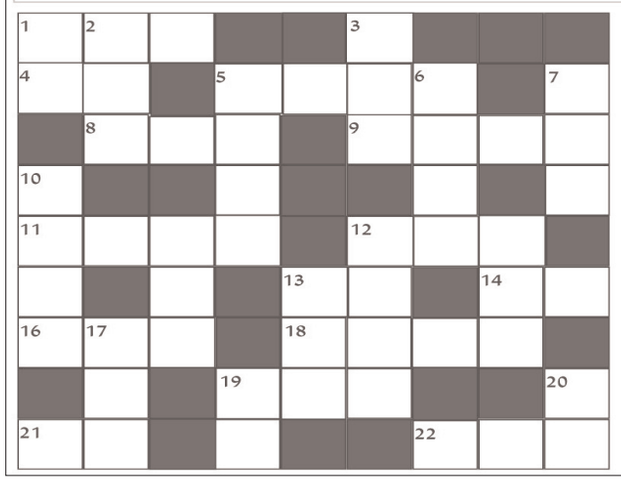

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 271 का हल

पं	क्ति		स्वा	द		स	ब	ब
जा		सु	हा	ना			ली	द
ब	हु	धा		द	ल	ना		ल
		क	मा	न		ग	ह	ना
भं	व	र				वा	म	
गी	त		म	ज	बू	र		ट
	न	म	स्का	र				र
		र्या			बी		ना	का
सं	वि	दा		ब	स	च	ल	ना

अदनान खान कलर्स के आगामी शो 'मन्नत हर खुशी पाने की' में महत्वाकांक्षाओं का ड्रामा शुरू करने के लिए तैयार हैं; प्रोमो रिलीज हो गया है

मुंबई। कलर्स की आगामी पेशकश, 'मन्नत - हर खुशी पाने की' ने एक और प्रोमो जारी करके दर्शकों की उत्सुकता बढ़ा दी है, जिसमें ड्रामा और भावनात्मक ट्विस्ट की भरमार है। मुंबई के एक रेस्तरां में सेट की गई, यह कहानी एक प्रतिभाशाली युवा शेफ मन्नत की जिंदगी पर आधारित है। वह ऐसी दुनिया में अपनी योग्यता साबित करने के लिए दृढ़ संकल्पित है, जो उसे उसकी प्रतिभा से ज्यादा उसकी साधारण जड़ों को अहमियत देती है। उसके सपनों को उसकी क्रूर बॉस से चुनौती मिलती है, जो हर मोड़ पर उसे कमतर आंकती है, और उसका उपहास उड़ाती है कि वह सिर्फ सड़क किनारे ठेला चलाने लायक ही है। हालांकि, उसके दूसरे बॉस, विक्रांत का मानना है कि उसमें हेड शेफ की हैट पहनने के अपने सपने को जीने की पूरी काबिलियत है, जो उसकी कुकिंग से पूरी तरह प्रभावित है। मन्नत को यह नहीं पता है कि ऐश्वर्या सिर्फ उसकी बॉस नहीं है - बल्कि वह उसकी मां भी है, वही महिला जिसने उसे जन्म देने के बाद छोड़ दिया था! मन्नत की भूमिका में आयशा सिंह, ऐश्वर्या के रूप में मोना वासु और विक्रांत के किरदार में अदनान खान अभिनीत, 'मन्नत हर खुशी पाने की' मां-बेटी के जटिल रिश्ते पर से पर्दा उठाती है, और यह बताती है कि किसी को अपने भाग्य को बदलने के लिए क्या करना पड़ता है। विक्रांत की भूमिका निभाने को लेकर अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए, अदनान खान कहते हैं, मैं 'मन्नत हर खुशी पाने की' के साथ 2024 को काफी खूबसूरत यादों के साथ समाप्त करने के लिए आभारी और रोमांचित हूं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, सोमवार 23 दिसम्बर 2024

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की पाती पाकर महिलाएं हुई खुश

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में सरकार के एक वर्ष पूरे होने के अवसर पर महिला बाल विकास विभाग के अंतर्गत महतारी वंदन योजना से लाभान्वित हितग्राहियों के विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन जिले में किया जा रहा है। इसके साथ ही हितग्राहियों को मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का महतारी वंदन योजना की पाती भी दिया गया। बगीचा विकास खंड के ग्राम पंचायत सरडीह में छत्तीसगढ़ शासन की महत्वाकांक्षी योजना महतारी वंदन योजना के तहत लाभान्वित हितग्राहियों के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया और विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

संक्षिप्त समाचार

मनोहर गौशाला के 11वें स्थापना दिवस पर दो दिवसीय कार्यक्रम कल से, राज्यपाल रमेन डेका होंगे शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। खैरागढ़ स्थित मनोहर गौशाला के 11वें स्थापना दिवस पर दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 24 और 25 दिसंबर को किया गया है। मनोहर गौशाला के ट्रस्टी डॉ. अखिल जैन (पदम डाकलिया) ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राज्यपाल रमेन डेका होंगे। विशेष अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष बिसेसर पटेल, जीव जंतु कल्याण बोर्ड भारत सरकार के डायरेक्टर सुनील मानसिंहका, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के डायरेक्टर ऑफ रिसर्च डॉ. विवेक त्रिपाठी और जीवदया रत्न अवार्ड से सम्मानित प्रीति मालू नवसारी (गुजरात) उपस्थित रहेंगी। पहले दिन निकलेगी भाव यात्रा- डॉ. अखिल जैन ने बताया कि पहले दिन 24 दिसंबर को श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु की संगीतमय भाव यात्रा शाम 7.15 बजे निकाली जाएगी। प्रसिद्ध विधिकारक पंकज चोपड़ा द्वारा भाव यात्रा एवं पूजन कराया जाएगा। दूसरे दिन 25 दिसंबर को श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु की पंच कल्याणक पूजा सुबह 8.30 बजे शुरू होगी। दोपहर 12.15 बजे से दीव दया पर गोष्ठी होगी।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल में रेल कर्मियों के स्वजनों को दिया सुरक्षित रेल परिचालन एवं स्वास्थ टिप्स

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर रेलवे स्टेशन के पास लोको पायलट कार्यालय में शुक्रवार दिनांक-20.12.2024 को आयोजित कार्यशाला में रेलवे कर्मी व उनके परिवार जनो के लिए रेलवे रेल दुर्घटनाओ को देखते हुए रेलवे के रायपुर लॉबी में रनिंग स्टाफ व उनके स्वजनों के लिए कार्यशाला हुई। इसमे उन्हे रेल दुर्घटनाओ की सामान्य वजह की जानकारी देते हुए इससे बचने के उपाय व बेहतर घरेलू माहौल रखने की जानकारी दी गई। रेल दुर्घटनाओ को ध्यान में रखते हुए परिचर्चा की गई। इस दौरान रनिंग स्टाफ के स्वजनों को संरक्षा टिप्स देने के साथ ही उनसे सुझाव भी लिया गया। कार्यक्रम में बडी संख्या में रेल कर्मचारी व स्वजन उपस्थित हुए। सहायक मंडल विद्युत इंजीनियर/ परिचालन/ भिलाई, श्री राजीव कुमार सोनी ने आवश्यक दिशा निर्देश दिया। रायपुर रेलवे हॉस्पिटल के द्वारा हैल्थ चेक अप कैंप के माध्यम से डॉक्टर विजोया विस्वास एवं उनकी टीम के द्वारा हैल्थ चेक अप किया गया एवं हैल्थ टिप्स दिया गया। कार्यक्रम में लोको सुपरवाईज़र श्री बी. एस. अट्ठभैया एवं श्री बी. के. राय उपस्थित थे। कार्यक्रम का आयोजन रायपुर लॉबी प्रभारी मुख्य चालकदल नियंत्रक- श्री भोली चौधरी द्वारा किया गया।

वरिष्ठ पत्रकार अश्विनी कुमार शर्मा का निधन

रायपुर (विश्व परिवार)। वरिष्ठ पत्रकार व रायपुर प्रेस क्लब के मानद सदस्य सुंदरनगर निवासी अश्विनी कुमार शर्मा (उम्र 72 वर्ष) का रविवार 22 दिसंबर को आकस्मिक निधन हो गया है। उन्होने युगधर्म, देशबंधु, अमृत संदेश, स्वदेश व लोकमाया समाचार पत्र में काफी लंबे समय तक अपनी सेवाएं दी है। उनका अंतिम संस्कार 23 दिसंबर, सोमवार को सुबह 11 बजे महादेव घाट श्मशानघाट में किया जाएगा। प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर, महासचिव डॉ वैभव शिव पाण्डेय, उपाध्यक्ष संदीप शुक्ला, कोषाध्यक्ष रमन हलवाई, संयुक्त सचिव तृप्ति सोनी, अरविंद सोनवानी सहित सभी सदस्यों ने गहरा दु:ख व्यक्त करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

पीआरएसआई के राष्ट्रीय सम्मेलन में पांच विभूतियों को दिया गया प्राइड ऑफ छत्तीसगढ़ सम्मान

राष्ट्रीय अधिवेशन में जुटे देशभर के जनसंपर्क पेशेवर

रायपुर (विश्व परिवार)। पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया के 46 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान छत्तीसगढ़ की पांच विभूतियों को प्राइड ऑफ़ छत्तीसगढ़ सम्मान से विभूषित किया गया है। सम्मेलन के शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने पद्मश्री डॉक्टर भारती बंधु को कबीर गायन एवं संगीत के क्षेत्र में, अनस्क्रिप्टेड यूट्यूब चैनल की संपादक डॉक्टर कीर्ति सिसोदिया, डॉक्टर आलोक कुमार चकवाल कुलपति गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, पूर्व राज्य निर्वाचन आयुक्त एवं साहित्यकार डॉक्टर सुशील त्रिवेदी एवं संपादक हरिभूमि एवं ड्डह्म॥ न्यूज़ चैनल डॉक्टर हिमांशु द्विवेदी को मीडिया क्षेत्र में उनकी दीर्घ सेवा एवं उत्कृष्ट कार्यो के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने इन विभूतियों के सम्मान को PRSI का सम्मान बताते हुए इन्हें छत्तीसगढ़ की धरोहर निरूपित किया। सम्मान समारोह के दौरान पर्सी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अजीत पाठक, महासचिव पी एल के मूर्ति, रायपुर चैप्टर के अध्यक्ष डॉक्टर शाहिद अली प्रमुख रूप से मौजूद थे। छत्तीसगढ़ में पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया का यह पहला राष्ट्रीय अधिवेशन है।अधिवेशन के दौरान जनसंपर्क क्षेत्र उल्लेखनीय कार्यों के लिए देश भर के जनसंपर्क क्षेत्र के संस्थाओं को 37 विभिन्न वर्गों में सम्मान दिया जा रहा है। सम्मेलन में देश भर के 200 से अधिक प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। रविवार को सम्मेलन का अंतिम दिन है।

अ.भा. विद्युत टेबल टेनिस में छत्तीसगढ़ उपविजेता, टीम इवेंट में रजत, सिंगल्स एवं डबल्स में कांस्य

रायपुर (विश्व परिवार)। 46वीं अखिल भारतीय विद्युत पुरूष टेबल टेनिस स्पर्धा में छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनी को उपविजेता बनने का गौरव मिला है। छत्तीसगढ़ के खिलाड़ी 1रजत और 2 कांस्य पदक जीतने में कामयाब रहे। 19-21 दिसंबर 2024 को लखनऊ में आयोजित इस टूर्नामेंट मे 9 राज्यों की टीमों ने हिस्सा लिया। छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक जिनको, कर्नाटक ट्रांसको, पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल की स्टेट पॉवर यूटिलिटीज की टीमों से मुकाबला कर छत्तीसगढ़ की टीम ने टीम इवेंट में रजत, सिंगल्स एवं डबल्स में कांस्य पदक हासिल किया। इस उपलब्धि के लिए छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव (आई.ए.एस.) ने टीम को बधाई दी।

स्पर्धा में छत्तीसगढ़ टीम के पांच खिलाड़ी ने राज्य का प्रतिनिधित्व किया।टीम इवेंट के फाइनल मैच में श्री रजनीश ओबेरॉय, समीर तिवारी, टी. पी सिंह, प्रशांत बापट व अनुराग शर्मा ने मुकाबला किया। टीम के मैनेजर श्री सागर पिंपलापुरे एवं कोच श्री संजीव केशकर ने बताया कि पिछले साल छत्तीसगढ के खिलाड़ियों ने टीम इवेंट व सिंगल्स में ही जीत हासिल की थी परंतु इस वर्ष डबल्स में भी टीम ने खिताब जीता है। यह हमारे लिए विशेष उपलब्धि है।

समापन समारोह मे उत्तर प्रदेश स्टेट पॉवर कॉरपोरेशन के प्रबंध निदेशक श्री पंकज कुमार [आई.ए.एस.] के मुख्य आतिथ्य में विजयी खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया गया।

श्री दिगंबर जैन परवार जैन समाज कोर ग्रुप की बैठक सम्पन्न, विभिन्न आवश्यक मुद्दों पर विचार किया गया

लाभांडी स्थित दिगंबर जैन मंदिर में चोरी से समाज में आक्रोश बैठक में चोरी की निंदा कर शीघ्र कार्यवाही की बात कही गई

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर (लघु तीर्थ) के श्री विधासागर हाल मालवीय रोड रायपुर आज दिनांक 22 दिसंबर 2024 को सुबह 11.30 बजे राजधानी रायपुर में निवासरत श्री दिगंबर जैन परवार समाज के सदस्यों की एक महत्वपूर्ण कोर ग्रुप आवश्यक बैठक का आयोजन हुआ। जिसमें परवार समाज की सदस्यता फार्म का विमोचन किया गया। साथ ही बैठक में उपस्थित परवार समाज के कोर कमेटी के प्रमुख सदस्यों को सदस्यता फार्म का वितरण कर ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को जोड़ने की योजना भी बनाई गई।

आगामी कार्यक्रम की रूप रेखा पर भी विचार विमर्श किया गया : आज की बैठक में श्री दिगंबर जैन परवार समाज के विस्तार एवं आगामी कार्यक्रमों की रूप रेखा पर विचार विमर्श किया गया। जिसमें दिगंबर जैन मुनि साधु संतों का प्रवेश एवं विहार हेतु टीम का गठन करना, परवार समाज के सदस्यों को ज्यादा से ज्यादा जोड़ कर सदस्यता फार्म सभी से भरवाना, परवार समाज की परिचय पुस्तिका का प्रकाशन डिजिटल डायरी का निर्माण करना, परवार समाज का वार्षिक सपरिवार मिलन समारोह आयोजित करना, आदि विषयों पर चर्चा की गई।

बैठक में रायपुर के लाभांडी दिगंबर जैन मंदिर में बड़ी चोरी की कड़ी निंदा की गई : लाभांडी क्षेत्र स्थित पद्मप्रभ दिगंबर जैन मंदिर में चोरों ने बड़ी चोरी की घटना को अंजाम दिया है। घटना में चोरों ने करीब 10 लाख रुपये से अधिक के कीमती आभूषण, कलश और अन्य लोगों पूजनीय वस्तुएं चुरा ली हैं। मंदिर में भगवान की मूर्ति को छोड़कर चोरों ने सबकुछ पार कर दिया हैं। चोरों ने जैन मंदिर में मूलनायक का स्वर्ण पॉलिस छत्र, 5 पंचमेरू, 8 अष्टप्रिहार्य, चांदी की 2 बड़ी थाली, चांदी के 9 अभिषेक कलश, चांदी के 6 शांतिधारा झारी, एक स्वर्ण कलश, चार छत्र चांदी, दो चांदी भाली, तीन आशिका, 5 चांदी की छोटी प्लेट, एक चांदी का लोटा, चांदी की एक गुंडी, चांदी की एक बड़ी गंजी, चांदी की एक चम्मच और अन्य सामग्री चोरी की है। इस घटना से जैन समुदाय में आक्रोश और गहरा दुख है। यह पहली बार नहीं है जब चोरों ने धार्मिक स्थलों को निशाना बनाया है। बैठक के माध्यम से प्रशासन से जल्द से जल्द चोरों को पकड़ने और चोरी किए गए सामान को बरामद करके अपराधियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की मांग की है। एवं शहर के सभी मंदिरो की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु योजना बनाने हेतु भी विचार विमर्श किया गया।

आज की बैठक में श्री इंद्र कुमार जैन, श्री प्रीतम जैन, श्री महेंद्र बांझल, श्री रमेश जैन, श्री महेंद्र जैन, श्री राकेश जैन, श्री अजीत जैन, शैलेन्द्र जैन संजय नायक, विपुल जैन अमिताभ जैन, नरेश जैन, शिशिर जैन, विज्ञान जैन, नवीन मोदी, गिरीश जैन, राजेंद्र जैन, श्रद्धेय जैन, रानु जैन, संदीप जैन, सुजीत जैन, प्रणीत जैन विशेष रूप से उपस्थित हुए। **-प्रणीत जैन**

दिगंबर जैन मंदिर मालवीय रोड मे संचालित पाठशाला के बच्चों ने घासीदास संग्रहालय का भ्रमण किया

रायपुर (विश्व परिवार)। आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के परम शिष्य मुनि मुनि श्री 108 आगम सागर जी महाराज रायपुर में अल्प प्रवास के दौरान विभिन्न दिगंबर जैन मंदिरों में श्री जी के दर्शनार्थ पहुंचे उस प्रभास के मध्य विहार करते हुए गुरुदेव पुरातत्व विभाग के संग्रहालय को देखने पहुंचे और जैन धर्म के इतिहास के अवशेषों को देखकर बड़े ही प्रभावित हुए और उन्होंने रायपुर दिगंबर जैन समाज की समितियों को निर्देशित किया कि प्रत्येक जैन मंदिर में संचालित पाठशाला के बच्चों को एक बार इस संग्रहालय के देखने हेतु जरूर लाना चाहिए इसलिए आज दिगंबर जैन मंदिर मालवीय रोड रायपुर के अंतर्गत संचालित आदिनाथ धार्मिक पाठशाला के 50 बच्चे एवं उनके पालकों को नगर घडी स्थित घासीदास संग्रहालय (म्यूजियम) रायपुर का भ्रमण कराया गया जिसमें विशेष रूप से हमें म्यूजियम डायरेक्ट प्रताप पारेख जी एवं सहायक पूनम शर्मा जी का सहयोग प्राप्त हुआ जिन्होंने बच्चों को जैन धर्म से संबंधित शिलालेख ,प्रतिमा एवं लिपियो का छत्तीसगढ़ से संबंध को विस्तार से जानकारी प्रदान की। **-लोकेश चंद्रकांत जैन**

द गुड स्टार्ट स्कूल और मॉडर्न इंस्टिट्यूट ऑफ पैरमेडिकल साइंस ने मनाया 10वां वार्षिक उत्सव

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रोफेसर कॉलोनी स्तिथि द गुड स्टार्ट स्कूल एवं मॉडर्न इंस्टिट्यूट ऑफ पैरमेडिकल साइंस भाटागांव रायपुर ने अपना 10 वां वार्षिक उत्सव मनाया। जिसमे बतौर मुख्य अतिथि श्री सत्य साई हेल्थ और एजुकेशन ट्रस्ट के चेयरमैन डॉ. सी. श्रीनिवास, नारायणना हॉस्पिटल के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. सुनील खेमका जी, एडवरटाइजिग एजेंसी एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री ओंकार सिंह जी एवं श्री अतुल गर्ग जी ने अपनी गरिमामय उपस्थिति दी। इस अवसर पर संस्था के नन्हे मुन्हे बच्चो द्वारा ग्रोइंग ऑफ एजेंस को अपने नृत्य द्वारा दर्शाने की कोशिश की गई। इस अवसर पर कक्षा दूसरी एवं तीसरी के द्वारा भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि चंद्रयान को बखूबी प्रस्तुत किया गया। नन्हे मुनन्हे बच्चों द्वारा मनमोहक प्रस्तुतिया दी गई। इस अवसर पर माननीय डॉ . सी. श्रीनिवास द्वारा बच्चों के मनमोहक प्रस्तुतियों की बहुत सराहना की गई। उनकी गरिमामय उपस्थिति ने संस्था के सभी लोगों को भाव विभोर कर दिया।

छत्तीसगढ़ के जंगलों में वृक्षों का घनत्व बढ़ा, देश में पहला स्थान

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट (ISFR) 2023 के अनुसार छत्तीसगढ़ में जंगल और वृक्षों की संख्या बढ़ी है। छत्तीसगढ़ ने संयुक्त वन एवं वृक्ष आवरण वृद्धि में देश में पहला स्थान हासिल किया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस पर खुशी जाहिर की है। भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार छत्तीसगढ़ का कुल वन आवरण क्षेत्र 55,812 वर्ग किलोमीटर है।

वन एवं वृक्ष आवरण में अधिकतम वृद्धि दर्शाने वाले चार राज्य छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, ओडिशा और राजस्थान है। इन चारों राज्यों में सबसे ज्यादा जंगल और पेड़ छत्तीसगढ़ में बढ़े हैं। यहां जंगल और वृक्ष आवरण 684 वर्ग किलोमीटर हो गया है. उत्तर प्रदेश (559 वर्ग कि.मी.), ओडिशा (559 वर्ग कि.मी.) और राजस्थान (394 वर्ग कि.मी.) हैं। साल 2021 की तुलना में देश के वन और वृक्ष आवरण में 1445 वर्ग किलोमीटर की बढ़त हुई है। जिसमें 156 वर्ग किलोमीटर जंगल और 1289 वर्ग किलोमीटर एरिया में पेड़ बढ़े हैं।

छत्तीसगढ़ में जंगल और पेड़ बढ़ने पर सीएम विष्णुदेव साय ने एक्स पर पोस्ट कर खुशी जताई, इसके लिए उन्होंने प्रदेशवासियों को धन्यवाद दिया। सीएम ने कहा कि ISFR 2023 की रिपोर्ट के अनुसार छत्तीसगढ़ ने संयुक्त वन एवं वृक्ष आवरण वृद्धि में देश में पहला स्थान हासिल किया है। वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रयासों और प्रदेशवासियों की पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी के कारण यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ को मिली। प्रदेश को हरित और समृद्ध बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। राज्य के वन आवरण में 94.75 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि के साथ कुल वन क्षेत्र अब 55,811.75 वर्ग किलोमीटर हो गया है।

बीएसएस प्रणवानंद अकादमी के वार्षिकोत्सव में शामिल हुए राज्यपाल रमेन डेका, मेधावी विद्यार्थियों के लिए 2 लाख रुपए देने की घोषणा

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री रमेन डेका आज भारत सेवा संघ प्रणवानंद अकादमी के वार्षिकोत्सव में शामिल हुए। उन्होंने विद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों के लिए 2 लाख रूपये प्रोत्साहन राशि राजभवन की ओर से देने की घोषणा की।

वार्षिकोत्सव में मुख्यअतिथि राज्यपाल श्री डेका ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरूकुल आश्रम शिक्षा की पद्धति हमारी देश की प्राचीन काल की पद्धति है जहां वेद, उपनिषद के साथ-साथ नैतिकता, आध्यात्म की शिक्षा दी जाती थी। भगवान राम और कृष्ण ने भी गुरूकुल से शिक्षा प्राप्त की थी। वर्तमान समय में भारत सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित यह अकादमी भी भारतीय संस्कृति, परंपराओं और नैतिक मूल्यों के संवर्धन में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने बताया कि वे भी इस संस्था से जुड़े हुए है और यह संस्था जरूरत मंदों लोगों के लिए कार्य कर रही है जो बहुत सराहनीय है।

राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 लागू करने से विद्यार्थियों का संर्वागीण विकास होगा। आज हम सभी एक प्रतिस्पर्धा में हैं। हर विद्यार्थी को मेडिकल एवं इंजीनियर में जाना है। नई पीढ़ी की सबसे समस्या दूसरों की नकल करना है। अपनी क्षमता एवं रूचि के अनुसार अपना कैरियर चुनने का निर्णय उन्हें लेने चाहिए। अपनी अंतरात्मा की आवाज सुने दुसरों की नकल न करें। विदेशों में बड़े-बड़े पैकेज की नौकरी मिलती है लेकिन सुकून नहीं मिलता है।

राज्यपाल ने विद्यार्थियों से कहा कि वे शिक्षा के साथ-साथ खेल, संगीत और अन्य गतिविधियों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। ये आपके व्यक्तित्व को निखरती है। भारत एक अदभुत राज्य है और यहां की संस्कृति भी अदभुत है। अपनी जड़ो से जुड़े रहें और देश के प्रति सदा कृतज्ञ रहें।

इस अवसर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने भी विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि गुरूकुल आश्रमों में केवल किताबी ज्ञान नहीं बल्कि नैतिकता, आध्यात्म, सेवा, देश भक्ति की शिक्षा दी जाती है। इससे संस्कारवान नागरिक तैयार होते है। इन गुणों के विकास के बिना शिक्षा का कोई महत्व नहीं है।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण प्राचार्य श्रीमती आनंदिता घोष ने दिया। इस अवसर पर प्रणवानंद अकादमी के सचिव स्वामी शिवरूपानंद, परब्रम्हानंद महराज एवं आश्रम के अन्य पदाधिकारी, स्कूल के शिक्षक, शिक्षिकाएं तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

लाखों के ईनामी नक्सली चढ़े सुरक्षाबल के हत्थे

सुकमा-रायपुर (आरएनएस)। जवानों को नक्सलियों के खिलाफ बड़ी सफलता मिली है. तीन इनामी समेत पांच नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया है. इनमें 1 महिला नक्सली भी शामिल है. गिरफ्तार एक पुरुष और एक महिला नक्सली पर 2-2 लाख और एक नक्सली पर 1 लाख रुपए का ईनाम घोषित है.थाना चिंतागुफा पुलिस, डीआरजी और 02 री वाहिनी सीआरपीएफ 203 कोबरा वाहिनी ने संयुक्त कार्रवाई की है. सभी गिरफ्तार नक्सली थाना चिंतागुफा क्षेत्र में एक ग्रामीण की हत्या करने की घटना में शामिल थे.जानकारी के मुताबिक, नक्सल विरोधी अभियान के दौरान चिंतागुफा थाना क्षेत्र के दुलेदा गांव के जंगल के करीब सुरक्षाबलों ने मुचाकी हुंगा उर्फ जट्टी, कवासी गंगी, माडवी हिंगा और दो अन्य को गिरफ्तार किया गया है. माडवी मेटागुडा आरपीसी के तहत दंडकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन का अध्यक्ष था. वहीं दो अन्य नक्सली निचले स्तर के कैडर के हैं. इधर अंतागढ़ के नयापारा नदी किनारे नक्सलियों ने बैनर पोस्टर लगा कर आरोप लगाया।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354